अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र

सर्वोदय जगत

वर्ष-42, अंक-13, 16-28 फरवरी, 2019

जन-राज्य
या
हिन्दू-राज्य

सर्व सेवा संघ
(अखिल भारत सर्वोदय मंडल)
द्वारा प्रकाशित

अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र
सर्वोदय जगत
सत्य, अहिंसा एवं सर्वोदय-सम्पूर्ण क्रांति का संदेश वाहक

वर्ष : 42, अंक : 13, 16-28 फरवरी, 2019

संपादक
अशोक मोती
फोन : 0542-2440223

संपादक मंडल
डॉ. रामजी सिंह भवानी शंकर 'कुसुम'

संपादकीय कार्यालय
सर्व सेवा संघ, साधना केन्द्र
राजघाट, वाराणसी-221001 (उ.प्र.)
फोन : 0542-2440-385/223
ईमेल : sarvodayajagat@gmail.com
Website : sssprakashan.com

शुल्क

मूल्य	:	05 रुपये
वार्षिक	:	100 रुपये
आजीवन	:	1000 रुपये

खाता संख्या : 383502010004310
IFSC No. UBIN-0538353
Union Bank of India
Rajghat, Varanasi

इस अंक में...

1. ताकि चुनाव का महापर्व, महासंग्राम... 2
2. मेरे सपनों का गांव... 3
3. वह तो जगदंबा थीं... 4
4. गांधीजी : परिपूर्ण हिन्दू... 7
5. बा-बापू : जैसा देखा... 7
6. जन-राज्य या हिन्दू-राज्य... 9
7. महामानव गांधीजी... 13
8. गांधी का जब परमभक्त बन गया... 15
9. उपन्यास - 'बा'... 18
10. गतिविधियां एवं समाचार... 19
11. कविताएं... 20

संपादकीय

...ताकि चुनाव का महापर्व महासंग्राम न बने

भारत में चुनाव के कार्यक्रमों की घोषणा मार्च 2019 के प्रथम सप्ताह में होने की संभावना है। ज्ञातव्य है कि वर्तमान लोकसभा का कार्यकाल 3 जून को समाप्त होगा। इस बीच नयी लोकसभा बन जाय, यह भारत के चुनाव आयोग की जिम्मेवारी है। भारत जैसे विशाल देश में चुनाव कई चरणों में कराने की जरूरत होती है, जिसके लिए भारतीय चुनाव आयोग में मंथन चलना लाजिमी है। लगता है कि आयोग ने इस दिशा में अपनी गतिविधियां तेज भी कर दी है।

विदित है कि पिछले 2014 के लोकसभा चुनाव नौ चरणों में संपन्न हुए थे। इस बार लोकसभा के चुनाव के साथ देश के कई राज्यों में विधान सभा के भी चुनाव होने हैं, जिनमें आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश शामिल हैं। साथ ही जम्मू-कश्मीर के विधान सभा के लिए समय-सीमा के अंदर चुनाव साथ ही हो सकते हैं, जहां राष्ट्रपति शासन लागू है। चुनाव आयोग के अनुसार देश में 81 करोड़ से अधिक मतदाता हैं, जो संख्या अमेरिका, यूरोप के सभी मतदाताओं के मिला देने से भी अधिक है। निःसंदेह चुनाव आयोग के सामने चुनाव के इस महापर्व को सफल बनाने की बड़ी चुनौती है।

वर्ष 2019 में 1 जनवरी को 18 वर्ष की आयु पूरी करने वाले युवा मतदाताओं की भी एक बड़ी संख्या होगी, जो पहली बार मत प्रयोग करेंगे और इनकी भूमिका चुनाव में महत्त्वपूर्ण होगी। इन युवाओं के नाम मतदाता सूची में पंजीकृत हों, इसे सुनिश्चित करना भी चुनाव आयोग की बड़ी जिम्मेवारी होगी। समाचार पत्र, सोशल मीडिया, मीडिया चैनल, वेबसाइट आदि की सकारात्मक भूमिका सुनिश्चित करना भी एक कठिन चुनौती है। पुरुषों के साथ महिलाओं, दलित, पिछड़े, आदिवासियों तथा अल्पसंख्यकों के मतदान को सुरक्षित, संरक्षित और सुनिश्चित करना भी आयोग की एक महत्त्वपूर्ण जिम्मेवारी है, जिसमें आयोग को पूरे मनोयोग से सहायता पहुंचाना हर भारतीय मतदाता, सभी राजनैतिक दलों और प्रशासन का पुनीत कर्तव्य है।

इस बीच देश के इन आसन्न चुनावों के मद्देनजर चुनाव की प्रक्रिया पर काफी गरमागरम बहस देखने को मिली है और यह बहस बैलेट पेपर बनाम इवीएम पर सर्वाधिक केन्द्रित है। 2014 में लोकसभा के इवीएम से हुए चुनाव पर आशंकाएं व्यक्त की जाती रही हैं। पिछले दिनों सैय्यद शुजा नाम के एक हैकर ने लंदन में एक प्रेस कान्फ्रेंस कर यह दावा किया है कि 2014 के लोकसभा चुनाव में देश की हर राजनीतिक पार्टियों ने इवीएम को प्रभावित करने की कोशिश की और कुछ ने फायदे भी उठाये। इस आशंका को कतिपय राज्यों में मध्यावधि चुनावों से बल मिले हैं, जिनमें यह पाया गया कि इवीएम में किसी भी पार्टी के लिए बटन दबाओ, एक ही दल के चुनाव-चिह्न पर मत पड़ते पाये गये। हालांकि आयोग ने ऐसी शिकायत पर तुरंत ध्यान दिया, मशीनें बदली गयी या समुचित कार्रवाई की गयी। इवीएम में ऐसे परिणाम पाये जाने से लोगों के मन में आशंका स्वाभाविक है। जब किसी एक भी इवीएम में ऐसा मैनुपुलेसन संभव है तो अन्य में भी यह संभव है, जैसा कि हैकर सैय्यद शुजा ने इवीएम हैक करने का बड़ा दावा किया है।

स्वाभाविक रूप से भारत के विपक्षी दल इवीएम के विरोध में खड़े हैं, तो सत्ताधारी दल इवीएम के पक्ष में। यहां तक कि इवीएम की कार्य-प्रणाली में सुधार के लिए विपक्षी दलों ने एक कमेटी भी बनायी है। ऐसे दबाव पर चुनाव आयोग ने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि—'दबाव या धमकियों से डरकर मत-पत्र के दौर में नहीं लौटेंगे।' हालांकि जब तक इवीएम में हैकिंग की आशंका को पूर्णतया निर्मूल न कर दिया जाय और देशवासियों को इसकी विश्वसनीयता पर पूर्ण विश्वास न हो जाय, चुनाव आयुक्त को कहीं से आये सुझाव या आशंका को धमकी नहीं मानना चाहिए क्योंकि देशवासियों को एक निष्पक्ष चुनाव के लिए आश्वस्त करना उनका कर्तव्य है। मात्र सत्ताधारी दल द्वारा आयोग को इवीएम की निष्पक्षता पर क्लीन चीट देने से भी इन आशंकाओं को निर्मूल नहीं माना जा सकता है।

इसमें कोई शक नहीं कि इवीएम जैसी मशीन ने भारत जैसे विशाल देश में चुनाव प्रक्रिया को काफी सुगम बना दिया है। बूथ कैपचरिंग और हिंसा से भी बहुत हद तक मुक्ति मिली है फिर भी चुनाव आयोग को इवीएम की निष्पक्षता की गारंटी देना और मतदाताओं को यह आश्वस्त करना कि उनका वोट वहीं पड़ेगा, जहां वे देंगे, बहुत आवश्यक है। जैसा कि कब से यह सुझाव दिया जाता रहा है कि इवीएम के साथ वीवीपैड परची वाली मशीन, निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए इस्तेमाल हो, इस पर आयोग को गौर करना चाहिए ताकि मतदाता पूर्णतया आश्वस्त हो जायें।

बेशक चुनाव आयोग के नेतृत्व में पिछले सात दशकों से निर्वाचन-प्रक्रिया बेहतर होती गयी है। एक बड़ा बदलाव चुनाव आयुक्त टीएन सेशन के कार्यकाल में देखने को मिला था, जिसे देशवासी भूल नहीं सकते। फिर भी इवीएम के अतिरिक्त चुनाव को प्रभावित करने के कई कारक मौजूद हैं, जिनमें चुनाव में कालेधन का प्रयोग एक प्रमुख कारक है। चुनाव आयोग के अनुसार पिछले पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में लगभग 168 करोड़ रुपये नकद बरामद हुए, जो एक चिन्ता का विषय है। मतदाताओं को प्रलोभन देकर वोट का खरीद-बिक्री जारी रहना चिन्ता का विषय है। इसलिए 1974 के जेपी आंदोलन में जेपी ने भ्रष्टाचार का मूल कारण चुनाव को माना था तथा उन्होंने भ्रष्टाचार की गंगोत्री ऊपर के स्तर पर विभिन्न राजनीतिक दलों के आलाकमानों को बताया था। पूंजीपतियों द्वारा राजनीतिक दलों को आर्थिक मदद कर देश की सत्ता पर दबाव बनाये रखने से देश का लोकतंत्र और लोकतांत्रिक प्रक्रिया कमजोर होती है। इसी तरह दलों द्वारा असंवैधानिक प्रभावों, साम्प्रदायिकता, जाति-धर्म और भाषा के नाम पर भड़काऊ तथा हिंसक गतिविधियां चलाये जाने से भी चुनाव प्रभावित होता है और ऐसे मामलों में चुनाव आयोग के हाथ में नियंत्रण की बहुत शक्ति नहीं होती है। इस कारण बेवजह आयोग की छवि ही धूमिल होती है। इन सभी परिस्थितियों से जूझते हुए चुनाव को शांतिपूर्ण एवं निष्पक्ष रूप से पूरा करने की बड़ी चुनौती चुनाव आयोग के सामने है।

आशा की जाती है कि देश में सात दशकों से कराये गये चुनावों की तरह 2019 का लोकसभा चुनाव का यह महापर्व भी कुशलतापूर्वक संपन्न होगा और महापर्व महासंग्राम में परिणत भी नहीं होगा। **–अशोक मोती**

मेरे सपनों का गांव

❑ गांधी

मेरा विश्वास है कि यदि भारत को सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त करनी है और भारत के द्वारा संसार को भी प्राप्त करनी है, तो आगे-पीछे यह तथ्य हमें स्वीकार करना ही पड़ेगा कि लोगों को गांवों में, न कि शहरों में; झोंपड़ों में, न कि महलों में रहना होगा। करोड़ों आदमी शहरों में और महलों में कभी एक-दूसरे के साथ सुख-शांति से रह नहीं सकेंगे। फिर तो उनके पास हिंसा और असत्य, दोनों का आश्रय लेने के सिवा और कोई चारा ही नहीं रहेगा।

मैं मानता हूं कि सत्य और अहिंसा के अभाव में मानवजाति के लिए विनाश के सिवा और कोई मार्ग नहीं रह जायेगा। सत्य और अहिंसा को हम ग्रामीण जीवन की सादगी में ही सिद्ध कर सकते हैं और यह सादगी चरखे में और चरखा जिन चीजों का प्रतीक है, उन्हीं में उत्तम रूप में मिल सकती है। अगर आज दुनिया गलत रास्ते पर जा रही है, तो मुझे उससे डरना नहीं चाहिए। हो सकता है कि भारत भी उसी रास्ते जाये। परंतु जीवन के अंतिम क्षण तक मेरा यह परम धर्म है कि मैं ऐसे सर्वनाश से भारत की और भारत के द्वारा समस्त संसार की रक्षा करने का प्रयत्न करूं।

मेरे कहने का सार यह है कि *मनुष्य को अपनी सच्ची जरूरतों से संतुष्ट रहना चाहिए और आत्मनिर्भर बन जाना चाहिए। अगर मनुष्य यह संयम नहीं रखता, तो वह अपनी रक्षा नहीं कर सकता।*

जहां मैं आधुनिक विज्ञान का प्रशंसक हूं, वहां मैं मानता हूं कि पुरानी चीज को ही अर्वाचीन विज्ञान के सच्चे प्रकाश में देखकर उसे नया जामा पहनाना और नया रूप देना चाहिए। तुम्हें यह नहीं सोचना चाहिए कि मेरी कल्पना में वही ग्रामीण जीवन है, जो आज हम देख रहे हैं। मेरे सपनों का गांव अभी तक मेरे विचारों में ही है। मेरे आदर्श गांव में बुद्धिमान मानव प्राणी होंगे। वे जानवरों की तरह गंदगी और अंधकार में नहीं रहेंगे। उसके स्त्री-पुरुष स्वतंत्र होंगे और संसार में किसी के सामने भी डटे रहने की क्षमता वाले होंगे। वहां न रोग होगा, न कोई बेकार रहेगा, न कोई ऐश-आराम में डूबा रहेगा। सबको अपने-अपने हिस्से का शरीर-श्रम करना होगा।...

आदर्श भारतीय गांव इस तरह बसाया और बनाया जाना चाहिए, जिससे वह संपूर्णतया निरोग रह सके। उसके झोंपड़ों और मकानों में काफी प्रकाश और वायु आ-जा सके। ये ऐसी चीजों के बने हों जो पांच मील की सीमा के अंदर उपलब्ध हो सकती हों। हर मकान के आसपास या आगे-पीछे इतना बड़ा आंगन हो, जिसमें गृहस्थ अपने लिए साग-भाजी लगा सकें और अपने पशुओं को रख सकें। गांव की गलियों में और रास्तों पर जहां तक हो सके धूल न हो। अपनी जरूरत के अनुसार गांव में कुएं हों, जिनसे गांव के सब आदमी पानी भर सकें। सबके लिए प्रार्थना-घर या मंदिर हों, सार्वजनिक सभा वगैरह के लिए अलग स्थान हो, गांव की अपनी गोचर-भूमि हो, सहकारी ढंग की एक गोशाला हो, ऐसी प्राथमिक और माध्यमिक शालाएं हों जिनमें औद्योगिक शिक्षा सर्वप्रधान वस्तु हो और गांव के अपने मामलों का निबटारा करने के लिए एक ग्राम-पंचायत भी हो। अपनी जरूरतों के लिए अनाज, साग-भाजी, फल, खादी वगैरह खुद गांव में ही पैदा हो। एक आदर्श गांव की मेरी अपनी यह कल्पना है।...अगर गांव के लोगों में सहयोग और प्रेमभाव हो, तो बगैर सरकारी सहायता के खुद ग्रामीण ही अपनी शक्ति के भीतर खर्च करके लगभग ये सारी बातें कर सकते हैं। अगर सरकारी सहायता भी मिल जाये तब तो ग्रामों की इस तरह पुनर्रचना हो सकती है, जिसकी कोई सीमा ही नहीं। पर अभी तो मैं यही सोच रहा हूं कि खुद ग्रामवासी अपने बल पर परस्पर सहयोग के साथ और सारे गांव के भले के लिए हिल-मिल कर मेहनत करें, तो वे क्या-क्या कर सकते हैं? मुझे तो यह निश्चय हो गया कि अगर उन्हें उचित सलाह और मार्गदर्शन मिलता रहे, तो गांव की—मैं व्यक्तियों की बात नहीं करता—आय बराबर दूरी हो सकती है। व्यापारिक दृष्टि से काम में आने लायक अखूट साधन-सामग्री हर गांव में भले ही न हो, पर स्थानीय उपयोग और लाभ के लिए तो लगभग हर गांव में है। परंतु सबसे बड़ी बदकिस्मती तो यह है कि अपनी दशा सुधारने के लिए गांव के लोग खुद नहीं करना चाहते। ('महात्मा गांधी : पूर्णाहुति से') ❑

22 फरवरी : कस्तूरबा पुण्य-स्मृति
'बा-स्मरण'

वह तो जगदंबा थीं

दक्षिण अफ्रीका में बापू के जीवन ने करवट लेना शुरू किया और 1904 में रस्किन की पुस्तक 'अन्टू दिस लास्ट' पढ़कर तो उन्होंने क्रांतिकारी परिवर्तन ही कर डाला। और फिनिक्स आश्रम की शुरुआत की। जीवन के परिवर्तन का उनका आग्रह इतना तीव्र और उत्कट था कि उन दिनों उनके साथ निभना बहुत मुश्किल बात थी। एक बार गोखलेजी ने गांधीजी से हंसी-हंसी में कहा था, ''तुम बड़े जालिम हो। एक ओर से तुम्हारा प्रेम और दूसरी ओर से तुम्हारा आग्रह दूसरे पर इतने जोर का असर करते हैं कि बेचारा तुम्हारी इच्छा के अनुसार चलने और तुम्हें खुश करने को मजबूर हो जाता है।'' श्रीमती सरोजिनी नायडू तो बापू को अक्सर जालिम कहतीं और अपने पत्रों में 'माई डियर टाइरेंट' (मेरे प्यारे जालिम) ऐसा लिखा करतीं।

बापू के ऐसे कठोर प्रेम में और जीवन-परिवर्तन की तीव्र उत्कटता में बा किस प्रकार निभी होंगी, यह सचमुच बड़े आश्चर्य की बात है। बापू का जीवन-प्रवाह त्याग, वैराग्य और संन्यास की तरफ जोरों से बहा जा रहा था। इस हालत में बापू के अनुकूल होकर उनके साथ चलने के लिए बा ने कम त्याग नहीं किया था! बापू जैसे प्रचंड झंझावती संन्यासी के साथ चलने में जीवन में कैसे-कैसे भूकंप के कठोर धक्के सहन करने के प्रसंग आये होंगे!!

दक्षिण अफ्रीका में बापू के जेल में जाने पर बा ने जेल के बाहर रहते वही भोजन लेने का व्रत लिया, जो जेल में नीचे की श्रेणी के कैदियों को दिया जाता था। सूखी डबल रोटी और मक्का का दलिया। दूध या चिकनाई के कभी दर्शन नहीं। परिणामस्वरूप वे सख्त बीमार हो गयीं। यहां तक कि उनके बचने की भी आशा नहीं रही। इस समय जेल से बापू

कस्तूरबा गांधी

ने लिखा : ''जुर्माना देकर तुम्हारी सेवा में नहीं आ सकता। देश के लिए कारावास भुगतान धर्म है। तुम्हारे पास पहुंच न पाऊं और तुम्हारी मृत्यु हो गयी तो तुम्हें जगदंबा की तरह पूजूंगा।''

अवसान-काल के समय का वर्णन करते हुए मनुबेन गांधी ने लिखा है—''बा के बिस्तर के आसपास साथी-संबंधी खड़े थे। बा ने एकाएक कहा, 'बापूजी!' सुशीला बहन ने बापू को बुलाया। वे हंसते-हंसते आये। कहने लगे, ''तुझे लगा होगा कि इतने सारे संबंधियों के आ जाने से मैंने तुझे छोड़ दिया, है न!'' यों कहकर बापू बा के निकट बैठे। बा के सिर पर धीरे-धीरे हाथ फिराने लगे। बा बोली, ''अब मैं जा रही हूं। हमने बहुत सुख-दुःख भोगे। मेरे लिए कोई न रोयें। अब मुझे शांति है।'' इतना बोलीं कि सांस रुक गया। कनुभाई (गांधी) फोटो ले रहे थे, परंतु बापूजी ने रोक दिया और रामधुन गाने को कहा। बस, दो मिनट में बा बापूजी की गोद में सिर रखकर सदा के लिए सो गयीं।

('माता कस्तूरबा' से)

रावजीभाई पटेल : दक्षिण अफ्रीका की बात। तब हम फिनिक्स आश्रम में रहते थे। सरकार के साथ अंतिम लड़ाई की तैयारियां चल रही थीं। सत्याग्रह का स्वरूप ऐसा था कि जिसमें वृद्ध, बच्चे, स्त्रियां सभी शामिल हो सकें। उसमें आवश्यकता थी केवल हृदय की सत्याग्रह की वृत्ति की, जिसकी तालीम आश्रम-जीवन से सहज मिल रही थी। वातावरण में उत्तेजना और उत्साह फैला हुआ था।

एक दिन सदा के नियमानुसार पाखाना साफ करने के बाद नहा-धोकर मैं लगभग साढ़े नौ बजे भोजनालय में गया। गांधीजी भी उसी समय शाला से आये। कस्तूरबा तो वहां थीं ही। रोटी का आटा गूंथ कर उन्होंने रख दिया था। उन्होंने रोटियां बेलना शुरू किया और मैंने सेंकना। गांधीजी फुटकर काम कर रहे थे। काम करते-करते गांधीजी ने एकाएक कस्तूरबा से पूछा : ''तुम्हें कुछ मालूम हुआ?''

''क्या?'' कस्तूरबा ने जिज्ञासा से पूछा।

गांधीजी ने जरा हंसते-हंसते जवाब दिया : ''आज तक तुम मेरी विवाहिता स्त्री थी। लेकिन अब तुम मेरी विवाहिता स्त्री नहीं रही।''

कस्तूरबा ने जरा भौंहें चढ़ाकर कहा : ''यह किसने कहा? तुम तो रोज नयी-नयी समस्याएं ढूंढ़ निकालते हो।!''

गांधीजी हंसते-हंसते बोले : ''मैं कहां ढूंढ़ निकालता हूं? वह जनरल स्मट्स कहता है कि ईसाई विवाह की तरह हमारा विवाह अदालत में दर्ज नहीं हुआ, इसलिए वह गैरकानूनी माना जायेगा। और इसलिए तुम मेरी विवाहिता स्त्री न मानी जाकर रखेल मानी जाओगी।''

कस्तूरबा ने गुस्से में आकर कहा : ''कहा उसने अपना सिर! उस निठल्ले को ऐसी-ऐसी बातें कहां से सूझती हैं?''

गांधीजी ने संक्षेप करके कहा : ''परंतु अब तुम स्त्रियां क्या करोगी?''

''हम क्या करेंगी?'' कस्तूरबा ने पूछा।

''हम लड़ते हैं वैसे तुम भी लड़ो। सच्ची विवाहिता स्त्री बनना हो और रखेल न बनना हो, साथ ही तुम्हें अपनी इज्जत प्यारी हो, तो तुम भी सरकार के खिलाफ लड़ो।''

''तुम तो जेल में जाते हो!''

''तुम भी अपनी इज्जत के खातिर जेल में जाने को तैयार हो जाओ।'' गांधीजी का वाक्य सुनकर कस्तूरबा आश्चर्य में पड़कर बोलीं : ''जेल में! औरतें भी कहीं जेल में जाती हैं?''

''हां, जेल में। स्त्रियां जेल में क्यों नहीं जा सकतीं? पुरुष जो सुख-दुःख भोगते हैं, वह स्त्रियां क्यों नहीं भोग सकतीं? राम के पीछे सीता गयी। हरिश्चन्द्र के पीछे तारामती गयी। नल के पीछे दमयंती गयी। और सबने जंगल में बेहद दुःख उठाये।''

गांधीजी का विवेचन सुनकर कस्तूरबा बोल उठीं : ''वे सब तो देवियों के समान थीं। उनके कदमों पर चलने की शक्ति हममें कहां है?''

गांधीजी ने गंभीरतापूर्वक कहा : ''इसमें क्या है? हम भी उनकी तरह व्यवहार करें तो उनके जैसे हो सकते हैं, देवता बन सकते हैं। राम के कुल का मैं और सीता के कुल की तुम। मैं राम बन सकता हूं और तुम सीता बन सकती हो। धर्म के खातिर अगर सीता राम के पीछे न गयी होती और महल में ही बैठी रहती, तो उसे कोई सीता माता न कहता। हरिश्चन्द्र के सत्यव्रत के खातिर तारामती बिकी न होती, तो हरिश्चन्द्र के सत्यव्रत में कमी रह जाती। उसे कोई सत्यवादी न कहता और तारामती को कोई सती न कहता। दमयंती नल के पीछे जंगलों में दुःख सहने में शामिल न हुई होती, तो उसे भी कोई सती न कहता। अब अगर तुम्हें अपनी आबरू रखनी हो, मेरी विवाहिता स्त्री बनना हो और रखेल समझी जाने के कलंक से मुक्त होना हो, तो तुम सरकार के खिलाफ लड़ो और जेल में जाने को तैयार हो जाओ।''

कस्तूरबा चुप रहीं। मैं देखता रहा कि बा क्या जवाब देती हैं। यह सब सुनने में मुझे मजा आ रहा था। इतने में कस्तूबा बोल उठीं : ''तो तुम्हें मुझे जेल में भेजना है न? अब इतना ही बाकी रह है। खैर! परंतु जेल का खाना मुझे अनुकूल आयेगा?''

''मैं तुमसे नहीं कहता कि तुम जेल में जाओ। तुम्हें अपनी इज्जत के खातिर जेल में जाने की उमंग हो तो जाओ। और जेल का भोजन अनुकूल न आये तो फलाहार करना।''

''जेल में सरकार फलाहार देगी?''

गांधीजी फलाहार प्राप्त करने का उपाय बताते हुए बोले :

''फलाहार न दे तब तक वहां उपवास करना।''

कस्तूरबा ने हंसकर कहा : ''क्या खूब! यह तो तुमने मुझे मरने का रास्ता बता दिया। मुझे लगता है कि जेल में गयी तो मैं जरूर मर जाऊंगी।''

गांधीजी सिर हिलाकर खिलखिला पड़े और बोले :

''हां-हां, मैं भी यही चाहता हूं। तुम जेल में मर जाओगी तो मैं जगदंबा की तरह तुम्हें पूजूंगा।''

''अच्छा, तब तो मैं जेल जाने को तैयार हूं।'' कस्तूरबा ने दृढ़ता से अपना निश्चय बताया।

गांधीजी खूब हंसे। उन्हें बड़ा आनंद हुआ। कस्तूरबा किसी काम से बाहर गयीं कि मौका देखकर गांधीजी ने मुझसे कहा, ''बा में यही खूबी है कि वह मन या बेमन से मेरी इच्छा के अनुसार चलती है।''

गांधीजी ने तो यह वाक्य अपने गृहस्थाश्रम धर्म के सिलसिले में कहा था। परंतु उनकी इच्छानुसार कस्तूरबा ने व्यवहार किया, इससे भारतीय स्त्रियों के उद्धार का मार्ग खुल गया। और आज हिन्दुस्तान में स्त्री-शक्ति की जो पवित्र और प्रचंड ज्वाला प्रकट हो गयी है, मुझे लगता है कि उसकी बीज इसी अवसर पर बोया गया था।

बापू : आज महाशिवरात्रि है। आज बा की श्राद्धतिथि। मनुबहन ने बापूजी से पूछा, आज शाम को सात पैंतीस को बा के अवसान के मुहूर्त पर गीतापाठ करें? बापू कहने लगे, ''जरूर करें। आज भोजन तो नहीं किया जा सकता। सोचता हूं कि बा का साथ अगर न होता तो मैं इतना ऊंचा नहीं उठा होता। बा ने मुझे खूब अच्छी तरह पहचान लिया था। और बा का परिचय मेरे सिवा दूसरा कौन अधिक दे सकता है? मेरे प्रति वह कितनी वफादार थी! और अंतिम समय जब मैं सोच रहा था कि बा मेरी गोद में जाये और देखो, बा ने मुझी को बुलाया और मेरी गोद में आखिरी सांस ली। ऐसी थी बा! उसे याद करके, उसके सद्‌गुणों की स्तुति करके उन गुणों को हम अपनायें, यही बा का सच्चा श्राद्ध है।''

''ब्रह्मचर्य का गुण मेरी अपेक्षा बा के लिए बहुत ज्यादा स्वाभाविक सिद्ध हुआ। शुरू में बा को इसका कोई ज्ञान भी नहीं था। मैंने विचार किया और बा ने उसको उठाकर अपना बना लिया। परिणामस्वरूप हमारा संबंध सच्चे मित्र का बना। मेरे साथ रहने में बा के लिए सन् 1906 से, असल में 1901 से ही मेरे काम में शरीक हो जाने के सिवा और कुछ रह ही न गया था। वह अलग रह नहीं सकती थी। उसने मित्र बनने पर भी स्त्री के नाते और पत्नी के नाते मेरे काम में समा जाने में ही अपना धर्म माना। इसमें बा ने मेरी निजी सेवा को अनिवार्य स्थान दिया। इसलिए मरते दम तक उसने मेरी सुविधा की देखरेख का काम छोड़ा नहीं। शुद्ध जीवन बिताने के मेरे प्रयत्न में मुझे उसने कभी रोका नहीं। इसके कारण हमारी बुद्धि, शक्ति में बहुत अंतर होते हुए भी मुझे यह लगा है कि हमारा जीवन संतोषी, सुखी और ऊर्ध्वगामी रहा।''

''बा मेरे जीवन में ताने-बाने की तरह एकरूप हो गयी थी। उसके चले जाने से जो खालीपन पैदा हो गया है, वह कभी भर नहीं सकता। मैं शोक में डूबता रहता हूं, ऐसी बात नहीं है। वास्तव में मेरी क्या स्थिति है, शब्दों में इसका वर्णन नहीं कर सकता।''

विनोबा : बा और बापू का जो संबंध था, वह अवर्णनीय कहा जायेगा। अपने यहां शास्त्रकारों ने पति-पत्नी के विवाह के साथ एक विधि बतायी है, वसिष्ठ और अरुंधती का दर्शन करना। आकाश में ये दो तारिकाएं साथ हैं। सप्तर्षि के सितारों में बाकी के छः ऋषियों की पत्नियां उनके साथ नहीं हैं, लेकिन वसिष्ठ और अरुंधती दोनों साथ ही रहे। उनका दर्शन पति-पत्नी को कराते हुए कहते हैं कि तुम्हारा जीवन निर्मल, अनुशासित और एक-दूसरे को न छोड़ने वाला हो, जैसा कि वसिष्ठ और अरुंधरती का था। अ-रुंधती यानी पति के मार्ग में रोध-अवरोध न करने वाली। पति ऊंचा चढ़ना

चाहता है, तो वह भी ऊंचा चढ़ने वाली हो। बापू जेल में जाते, तो बा भी जेल में जातीं। बापू सत्याग्रह करते, तो बा भी सत्याग्रह करतीं। वे जो भी करें, बा उनके साथ थीं। उन्होंने उनके अच्छे कामों में रुकावट नहीं डाली।

इसी जमाने में रामकृष्ण परमहंस की मिसाल है। रामकृष्ण रोज शक्तिमाता की पूजा करते थे। विवाह के बाद एक दिन उन्होंने अपनी पत्नी शारदादेवी को चौकी पर बिठाया, उनके सिर पर फूल चढ़ाये, आरती की और प्रणाम करके कहा, ''आज से तुम हमारी माता हो गयी। तुम भगवती देवी हो हमारे लिए।'' तब से वे शारदा माता हो गयीं। बापू ने ऐसा फूल, गंध आदि नहीं चढ़ाया। लेकिन बापू ने बा को माता माना। पत्नी के साथ माता मानकर व्यवहार करना, बहुत बड़ा आदर्श है। इससे वृत्ति एकदम ऊंची उठती है और जीवन निर्मल बनता है।

बा के जीवन में कभी कुछ लोभ प्रकट होता था, जिसकी बापू टीका भी करते थे और कभी-कभी समाचार-पत्रों में भी जाहिर कर देते थे। परंतु बा का वह मोह अपने लिए नहीं था। उनमें जरा भी व्यक्तिगत वासना नहीं थी। उनके चार ही बच्चे थे, ऐसा नहीं। आश्रम में जितने भी हमारे जैसे बच्चे थे, उन पर बा का समान प्यार था। जो लोभ उनमें कभी दीख पड़ा, वह सब हमारे लिए था, ऐसा हम अत्यंत कृतज्ञतापूर्वक आज स्मरण करते हैं।

एक बार बा की गंभीर बीमारी में डॉक्टरों ने सलाह दी कि शक्ति के लिए बा को अंडे लेना जरूरी है। डॉक्टर जानते थे कि बा अंडे खाना कबूल नहीं करेंगी। इसलिए उन्होंने निर्बीज अंडे लेने में अहिंसा की दृष्टि से कोई बाधा नहीं है। फिर भी बा ने कहा कि ''विनोबा से पूछिए, वे क्या सलाह देते हैं?'' मुझसे पूछा गया तो मैंने कहा कि, ''निर्बीज अंडे यद्यपि फलित नहीं होते, लेकिन वे विकारमूलक तो हैं ही। इसलिए अहिंसा की दृष्टि से उसे लेने में बाधा न भी हो, आध्यात्मिक दृष्टि से लेना उचित नहीं।'' बा ने जवाब सुन लिया। और निर्बीज अंडे भी न लेने का निर्णय लिया।

सर्व सेवा संघ का 87वां अधिवेशन

सर्व सेवा संघ (अ. भा. सर्वोदय मंडल) का 87वां अधिवेशन 12-13 मार्च, 2019 (मंगलवार-बुधवार) को रायपुर (छत्तीसगढ़) में अध्यक्ष श्री महादेव विद्रोही की अध्यक्षता में आयोजित होगा। अधिवेशन 12 मार्च की सुबह 10.30 बजे शुरू होगा और 13 मार्च की शाम 5.00 बजे तक चलेगा। **इस कार्यक्रम में देशभर से सभी गांधी-विचार प्रेमी सादर आमंत्रित हैं।**

तारीख : 12-13 मार्च, 2019 (मंगलवार-बुधवार)
स्थान : रामस्वरूपदास निरंजनलाल धर्मशाला, राजीव गांधी मार्ग, (वी आई पी रोड), बेबीलॉन के निकट, रायपुर (छत्तीसगढ़)
संपर्क : श्री सियाराम साहु, अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ सर्वोदय मंडल मो. : 8827489499

कैसे पहुंचे : रायपुर, नागपुर-हावड़ा मेन लाइन पर एक महत्त्वपूर्ण स्टेशन है। देश के करीब-करीब सभी महत्त्वपूर्ण स्टेशनों से रायपुर के लिए सीधी गाड़ियां हैं।

रायपुर रेलवे स्टेशन से प्लेटफार्म नं. 1 की ओर से बाहर निकलें। यहां से अधिवेशन स्थल करीब 8 किमी की दूरी पर है। हवाई अड्डा जाने वाली सिटी बसों एवं ऑटोरिक्शा आदि से भी यहां पहुंचा जा सकता है। ऑटोरिक्शा का किराया करीब 110/- रुपये है। **विशेष सूचना : (1)** यह अधिवेशन होली के एक सप्ताह पहले हो रहा है, इसलिए गाड़ियों में भीड़ होने की संभावना है। अतः आप अपने पहुंचने एवं वापसी का रेल आरक्षण समय से करा लें ताकि अंतिम समय में परेशानी न हो, रेल आरक्षण 4 महीने पहले शुरू होता है। **(2)** किसी भी सहायता के लिए रायपुर रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नं. एक (1) पर अवस्थित सर्वोदय बुक स्टाल से संपर्क किया जा सकता है। **–शेख हुसैन,** महामंत्री

बा की अंतिम बीमारी थी। खांसी और दमा से शरीर कमजोर हो गया था। रात को तीन-साढ़े-तीन बजे होंगे। बीमारी ने एकदम जोर पकड़ा। श्वास जोर से चल रही थी। ऐसी स्थिति में बा सूरदास का भजन गाने लगीं— *हे गोविन्द राखो शरण। अब तो जीवन हारे*...इतने में सुशीलाबहन आयीं। उन्होंने नाड़ी देखी और बा को कहा, ''बा, आप हमको भी भजन गाने को कहिए न! आप बोलने का श्रम मत करिये, थकान लगेगी।'' बा उत्तर दे रही हैं, ''कोई बात नहीं। भगवान के नाम की भी क्या कोई थकान लगती है! यों तो मैं तुम्हीं को गाने को कहती, पर अभी मुझे गाने की इच्छा हो गयी। उससे मुझे अच्छा लगता है।''

'भगवानना नामनो ते कंई थाक लागतो हशे!' —बा का यह गुजरती वाक्य! इतना ही अगर हम सीख लें, तो जन्म सार्थक होगा। ❑

प्रसिद्ध अमेरिकन पत्रकार लुई फिशर ने कस्तूरबा के बारे में लिखा है :—

''शि लुक्स द सिम्बॉल ऑफ सेल्फ-इफेसमेंट''।

–वे आत्मविलोपन की मूक मूर्ति जैसी मालूम पड़ती हैं।

बापू ने बा के बारे में लिखा है :—

''अहिंसा का अर्थ है असीम और अनंत प्रेम। दूसरे शब्दों में इसका अर्थ है, कष्ट सहने की अपार क्षमता। स्त्री के सिवा अधिक से अधिक यह क्षमता भला किसमें हो सकती है? वह आज भी त्याग की, मूक कष्ट-सहन की, नम्रता की, श्रद्धा की जीवंत मूर्ति हैं।''

गांधीजी : परिपूर्ण हिन्दू

❑ विनोबा

तीन हजार साल पहले मनु महाराज ने भविष्य लिखा था :

एतद्देश-प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

—कुल पृथ्वी के लोग इस देश में पैदा हुए उत्तम लोगों से अपना-अपना चरित्र कैसा होना चाहिए, इसकी शिक्षा लेंगे। गांधीजी के कारण पहली बार ही मनु की भविष्यवाणी सिद्ध हुई है। उन्होंने जो विचार हमारे सामने रखा है, उसका अगर हम आचरण करेंगे, तो हिन्दुस्तान दुनिया का मार्गदर्शक बन सकेगा।

आश्चर्य की बात है कि इन दिनों हिन्दूधर्म का बहुत ही उत्तम आदर्श जिन्होंने अपने जीवन में रखा, उन महात्मा गांधी को सनातनी लोग हिन्दूधर्म का विरोधी मानते हैं! हम समझते हैं कि हिन्दू धर्म का बचाव जितना गांधीजी ने किया और जितनी इज्जत उन्होंने बढ़ायी, उतनी शायद ही दूसरे किसी व्यक्ति ने पिछले सैकड़ों सालों में की होगी।

हिन्दू संगठन के औचित्य के बारे में हमें प्रश्न पूछा गया है। हिन्दू-संगठन यानी मुस्लिम-द्वेष तो नहीं हो सकता। हिन्दू-संगठन का अर्थ अगर चारित्र्य-संगठन होता है या सेवा-संगठन होता है, और वह *सर्वेषां अविरोधेन* के तत्त्व से होता है, तो उसका औचित्य हो सकता है। क्या गांधीजी से बढ़कर हिन्दूधर्म पर प्रेम करने वाला और हिन्दू-संगठन को बल देने वाला कोई हुआ है? गीता-प्रचार को गांधीजी ने जितना महत्त्व दिया, उतना शंकराचार्य और ज्ञानदेव के बाद किसी ने नहीं दिया। लेकिन उन्होंने उसी 'सर्वेषाम्' के सिद्धांत से काम किया। इस तत्त्व को पहचानो, इसकी कसौटी पर अपने काम को कसो।

जैसे नीचे की तरफ बहना पानी का सहज धर्म है, वैसे ही मनुष्य के लिए मित्र का प्यार सहज प्राप्त है। दुश्मन पर प्यार सहज प्राप्त नहीं होता। बल्कि वहां सहज प्राप्त द्वेष ही है। उस हालत में उनके बारे में प्रेम का प्रकाश ज्यादा ही होना चाहिए। यह अहिंसा का एक विशेष दर्शन है। अगर समत्व लाना है, तो अपने पक्ष से भिन्न पक्ष की तरफ पक्षपात करना होगा। यह अहिंसा का रहस्य है।

गांधीजी पर आक्षेप था कि वे मुसलमानों का अधिक पक्षपात करते थे। बापू कैसे थे, देखिए! एक बार दिल्ली में हम जा रहे थे। रास्ते में कुतुबमिनार आया। किसी ने गांधीजी को कुतुबमिनार पर चढ़ने को कहा। उन्होंने जवाब दिया कि मैं उस पर नहीं चढ़ूंगा, क्योंकि मैंने सुना है कि उसकी बुनियाद में हिन्दू देवताओं की मूर्तियां तोड़कर डाली गयी हैं। वे अपने को परिपूर्ण हिन्दू मानते थे। यहां तक कि कभी-कभी मैं उनसे कहता था कि सनातनी हिन्दुत्व का इतना आग्रह क्यों? वे कहते थे कि, ''वह मुझे सहजप्राप्त है, मैं उसको सुधार सकता हूं, लेकिन जो है, उसके लिए मुझे अभिमान है।'' फिर भी वे मुसलमानों का पक्षपात करते थे, *ताकि सच्चा निष्पक्षपाती न्याय हो सके।* जो अपने जैसे, अपनी जाति वाले होते हैं, उनके प्रति तो सहज ही प्रेम होता है। इसलिए यह जरूरी है कि हमसे अलग माने जाने वालों के लिए विशेष प्रेम हो। ❑

बा-बापू : जैसा देखा

❑ नारायण देसाई

बापू के जीवन में बा का स्थान असाधारण था। काठियावाड़ के एक राजा के दीवान के सुशिक्षित पुत्र की अशिक्षित पत्नी के रूप में कस्तूरबा के जीवन का प्रारंभ हुआ। आगा खां महल में बापू के सान्निध्य में जब उनकी मृत्यु हुई, तब बापू ने बा के संबंध में कहा था : 'वह तो जगदंबा थी।' एक सामान्य भारतीय नारी ने अपने जीवनकाल में ही इतनी बड़ी मंजिल कैसे तय कर ली? कस्तूरबा के विकास का सबसे महत्त्व कारण यही था कि वह नित्य विकसनशील महात्मा की पत्नी थीं। लेकिन यही एकमात्र कारण नहीं था। वह सच्चे अर्थ में महात्मा की सहधर्मचारिणी थीं। महात्मा के साथ-साथ धर्म का आचरण करना कोई छोटी बात नहीं थी। महादेव भाई के शब्दों में कहा जाये तो वह ज्वालामुखी पर्वत के मुंह पर बैठने जितना कठिन था।

भारतीय पुराणों और वाङ्मय में पत्नी की जो श्रद्धामयी मूर्ति की कल्पना की गयी है, उस श्रद्धामयी निष्ठावान सती का दर्शन इस युग में बा में होता था। ऐसी सोलह आने श्रद्धा के कारण ही वह बापू की सधर्मचारिणी बन सकीं।

लेकिन ऐसी श्रद्धा होते हुए भी उन्होंने अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व खो नहीं दिया था। समय-समय पर बापू को सीधे रास्ते लाने का भी काम उन्होंने किया है। दक्षिण-अफ्रीका में अपने एक हरिजन सहयोगी के मल-मूत्र का बर्तन साफ करने से बा ने इनकार किया था। तब बापू उनको घर से बाहर निकालने जा रहे थे। तब बा ने कहा, 'कुछ तो शरम रखो, इस दूर परदेश में आप मुझे घर से निकालने पर उतारू हो गये हैं!' अपने सिद्धांतों के आग्रह में अंधे बने बापू को जागृत करने का यह प्रसंग बापू ने खुद ही अश्रुपूर्ण कलम से अपनी आत्मकथा में अंकित किया है। इसके बाद जिन्दगीभर बा ने अपनी स्वतंत्र अस्मिता कायम रखी थीं। बापू के साथ वह काफी तपी-तपायी, बापू के साथ निरंतर उनका जीवन-परिवर्तन भी हुआ। परंतु यह सारा परिवर्तन उन्होंने स्वेच्छापूर्वक किया।

बापू के विशाल परिवार को बा एक मातृस्थान लगती थीं, फिर भी बा अपने रक्तसंबंधी सगे लोगों के विषय में बापू के जितनी अलिप्त नहीं रहती थीं। इस संबंध में सबसे कठिन परीक्षा हरिलाल काका (बापू के ज्येष्ठ पुत्र) ने करायी। बचपन से उनको शिकायत थी कि बापू ने उनकी शिक्षा का ठीक प्रबंध नहीं किया। तब से ही उनका स्वभाव बापू के खिलाफ बगावत करने का बन गया था। खास करके उनकी पत्नी गुलाब बहन की मृत्यु के बाद हरिलाल काका रास्ते से भटक गये। उनको ऐसी संगत मिली, जिससे वे कुमार्ग पर उतर गये। उनके इस व्यवहार का बा को बड़ा दुःख था। काफी कोशिश की गयी, लेकिन आखिर तक वे वापस नहीं आये। कुछ दिन बाद खबर आयी कि उन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। उस समय कस्तूरबा ने हरिलाल के नाम पत्र लिखकर अपनी अंतर्वेदना प्रकट की थी।

मणिलाल काका दक्षिण-अफ्रीका में रहकर 'इंडियन ओपीनियन' अखबार चलाते थे। रामदास काका रेशमी स्वभाव के व्यक्ति। कहीं भी गांधी के पुत्र के नाते अपनी पहचान नहीं देते थे। नागपुर में एक सामान्य नौकरी करके अपने कुटुंब का भरण-पोषण किया। देवदास काका 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के मैनेजिंग डायरेक्टर थे। इस तरह बा के सभी पुत्र बा से दूर-दूर थे। लेकिन पौत्र और पौत्रियां बा के पास ही रहती थीं।

इनके अलावा बापू के सगे भी बा के सगे बनकर आते थे, वे अलग। एक बार मध्य प्रदेश के डॉ. खरे के मंत्रिमंडल में हरिजनों को नहीं लिया गया, इसको लेकर कुछ हरिजनों ने बापू के आश्रम में आकर 'सत्याग्रह' करने का निश्चय किया। इनके सत्याग्रह में उपवास था, लेकिन मृत्यु का भय नहीं था। क्योंकि बारी-बारी से एक आदमी 24 घंटों का उपवास करता था। इन लोगों ने सत्याग्रहियों के रहने के लिए आश्रम में जगह की मांग की। बापू ने उनको ही जगह पसंद कर लेने को कहा। इन लोगों ने सब कुटियों को देखकर बा की कुटी ही पसंद की। यह कुटी बापू की कुटी के बगल में ही थी। हरिजन 'सत्याग्रहियों' ने लेटने के लिए बा का कमरा और बरामदा पसंद किया।

बापू ने बा से पूछा, 'इन लोगों ने तुम्हारा कमरा पसंद किया है। क्यों इनको दिया जाये न?' प्रारंभ में बा ने कुछ आनाकानी की। बापू ने सत्याग्रहियों की ओर से आग्रह किया। अंत में बा ने कहा, 'ये तो आपके लड़के हैं, अपनी झोपड़ी में ही जगह दे दीजिये न?' बापू ने हंसकर जवाब दिया, 'लेकिन मेरे लड़के तेरे लड़के भी तो हैं!' बा निरुत्तर हो गयीं और अपना कमरा इन 'सत्याग्रहियों' के लिए खाली कर दिया।

यह 'सत्याग्रह' कुछ दिन चला और शायद नये सत्याग्रहियों के अभाव में समेट लिया गया। लेकिन तब तक उन्होंने बा के कमरे पर कब्जा कर रखा था। इनकी रहन-सहन में सफाई नहीं थी। बा ने वह सब चुपचाप सहन किया। इतना ही नहीं, आवश्यकता पड़ने पर उन लोगों को पीने के लिए पानी देती थीं और समय-समय पर खबर भी पूछ लेती थीं। एक बार खुद के लड़कों की तरह स्वीकार कर लेने के बाद वे चाहे जैसे भले-बुरे हों, तो भी उसकी बा को परवाह नहीं थी। उनका कर्तव्य तो पुत्रों की स्नेहयुक्त सेवा करना ही था।

आश्रम में आम तौर पर भोजन परोसने का काम बापू करते थे। भोजन संबंधी अपने तरह-तरह के प्रयोगों की जानकारी वे मेहमानों को देते जाते। 'इस खाखरे में एक चम्मच सोडा डाला है, यह चटनी किस चीज की है, जानते हो? खाओगे, तब पता चलेगा। कड़ुवे नीम का कड़ुवापन तो उसका गुण ही है न? लहसुन रक्तचाप के लिए लाभदायी है।' इत्यादि। परोसने में बा भी बापू की मदद करती थीं, लेकिन वह मक्खन, गुड़ या ऐसी ही कोई मीठी चीज परोसती थीं। उनके परोसने में हम बच्चों को विशेष मजा आता था। बाहर से कोई चीज भेंट के तौर पर आयी हो तो बा वह हमारे लिए बचाकर रखती थीं।

नयी-नयी चीज सीखने के शौक में बा को बुढ़ापा कभी छुआ ही नहीं। एक बालक के जितनी उत्सुकता से वह सीखने को तैयार रहती थीं। बा का अक्षर-ज्ञान मामूली था। उस वक्त रामनारायण चौधरी के पास मैं हिन्दी व्याकरण और रामायण पढ़ रहा था। बा ने मुझे बुलाकर कहा, 'तू मुझे रामायण नहीं पढ़ायेगा?' मैं असमंजस में पड़ गया। मैंने कहा, 'मोटीबा, आप रामनारायणजी के पास ही पढ़िये न? मैं तो नौसिखिया हूं।' बा ने कहा, 'नहीं, नहीं, रामनारायण के पास तो समय होगा या नहीं, कह नहीं सकती। फिर मुझे कोई गुजराती में समझाने वाला तो चाहिए? ऐसा कर, तू दिन में उनके पास जो सीखता है, वह मुझे शाम को सिखाता जा। मैं भी तो नौसिखिया ही हूं न!' फिर कुछ दिन तक रोज शाम को सत्तर साल की मोटीबा ने पंद्रह वर्ष के बाबला से तुलसीकृत रामायण के पाठ लिये। एक बार बापू भी यह नाटक देख गये और अपनी मुस्कुराहट द्वारा उन्होंने सम्मति प्रकट की। आज भी मैं जब रामचरितमानस खोलता हूं, तब मेरे मानस पटल पर जगन्माता सीता के साथ-साथ जगदंबा कस्तूरबा की वह भक्तिमयी निर्मल मूर्ति विराजमान हो जाती है। ❑

जन-राज्य या हिन्दू-राज्य!

❑ जयप्रकाश नारायण

एक लंबे अर्से के बाद आपके सामने आने का मौका मिला है। इस अर्से में देश में बड़ी-बड़ी घटनाएं घटी हैं। उन घटनाओं का क्या महत्त्व है, मैं नहीं जानता कि आपमें से कितने भाई उसे समझते होंगे। उन घटनाओं ने देश के सामने एक बहुत बड़ा प्रश्न खड़ा कर दिया है। 15 अगस्त को देश आजाद हुआ। बड़ी कसमकश के बाद हमने आजादी हासिल की, आपस में जो भी झगड़े हों, प्रवृत्तियां हों, रास्ते हों, लेकिन यह आजादी बराबर कायम रहेगी, यह आमलोगों का खयाल है। किन्तु पिछले हफ्तों की घटनाओं ने सवाल पेश किया है कि यह आजाद हिन्दुस्तान कितने दिन तक जिन्दा रह सकेगा? या यह जिन्दा रहेगा भी की नहीं? मैं मानता हूं सबको इस खतरे का अनुभव नहीं हो सकता। आजाद भारत के जीने पर भी संशय हो; इतनी दूर तक अभी बहुतों ने नहीं सोच हो, लेकिन यदि आप हालात को समझेंगे और सोचेंगे, तो आप भी इसी नतीजे पर आयेंगे।

कुछ दिन पहले मैं दिल्ली गया था—रेल और खान के मजदूरों का हाल लेकर। उन्हीं दिनों दिल्ली में दंगा चल रहा था। मैंने जो हालत देखी, तस्वीर देखी, उससे मैं चिन्तित हुआ, परेशान हुआ। सिर्फ दुःखी नहीं हुआ, देश के अंधकारमय भविष्य की कल्पना कर स्तब्ध रह गया। अखबारों में आपने सिर्फ यह पढ़ा होगा कि पंजाब और दिल्ली में दंगे हो रहे हैं, पश्चिमी पंजाब में जो जुल्म हुए उसकी प्रतिक्रिया पूर्वी पंजाब में हुई और वही फिर बढ़ते-बढ़ते दिल्ली पहुंची। लेकिन मेरे साथ आप दिल्ली में होते तो आप भी अपनी आंखों से देखते कि सिर्फ हिन्दू-मुस्लिम दंगा ही नहीं हो रहा था, उससे भी खतरनाक चीज दिल्ली की सड़कों पर हो रही थी। वहां आजाद हिन्दुस्तान के तुरंत लगे हुए पौधे के जड़ पर कुल्हाड़ी चल रही थी। आजाद हिन्दुस्तान की नींव हिल रही थी। सड़कों पर फौज के सिपाही खड़े हैं, मशीनगनें हैं, फौजी लोरियां हैं, रायफल लिए सैनिक हैं। लेकिन उनके सामने कत्ल हो रहा है और तमाशा देख रहे हैं। हुकूमत का हुक्म था कि जहां कहीं लूट होते देखो तुरंत गोली चलाओ। हत्यारों को गोली का निशाना बनाने में मत चूको। यह हुक्म था हिन्दुस्तान के प्रधानमंत्री का और उनकी कैबिनेट का। किन्तु उन्हीं के नौकर खुलेआम उनकी मुखालफत कर रहे थे, आज्ञा का उल्लंघन कर रहे थे। आप ही सोचिये जिस हुकूमत का हुक्म उसके सैनिक मानने को तैयार न हो, वह कितने दिनों तक चल सकेगी।

मेरे मन में प्रश्न उठा—नब्बे वर्षों से आजादी की जो लड़ाई हमने लड़ी—सन् 1957 से ही—जो बड़ी-बड़ी कुर्बानियां हम करते आये, हमारी बहनों ने जो बेइज्जतियां झेलीं, हमारे भाइयों ने भारत माता की वेदी पर अपनी जानों की जो बलि चढ़ाई, सरदार भगत सिंह और उनके साथियों ने बंगाल के क्रांतिकारियों ने, बिहार के बैकुंठ शुक्ल ने, कहां तक गिनाऊं, हजारों नौजवानों ने जो अपने को देश पर निसार कर दिया, मिटा दिया, क्या उसका हस्र यही होने वाला था? लाखों आदमी वर्षों जेलों में सड़ते रहे, गांव के गांव लुट गये, बर्बाद हुए, क्या उसका नतीजा यही होना था? हमने अपने खून से जिस पौधे को सींचा, उस पौधे पर इस तरह हमारी आंखों के सामने ही हमले हों। आप कहियेगा फौज ने हुक्म नहीं माना तो क्या हुआ, इससे आजादी पर कौन-सा खतरा है? लेकिन कल्पना कीजिए, अगर दिल्ली की हालत पटना, नागपुर, मद्रास, कटक आदि जगहों में हो तो फिर देश की हालत क्या हो जाये? सौ-डेढ़-सौ वर्षों तक अंग्रेजी हुकूमत रही, सब लोग उसका हुक्म सर झुकाकर मानते रहे, राजे-महराजे भी सर झुकाते रहे। लेकिन उस हुकूमत के खत्म होने के बाद अगर दिल्ली में कोई हुकूमत न रह जाये, तो देश भर में शांति कायम रख सके, उसके मुलाजिम, उसके सैनिक उसका हुक्म न मानें तो क्या फिर सारा देश टुकड़े-टुकड़े में बंटने से बच सकता है। मुगलों का राज एक शक्तिशाली राज्य था किन्तु ज्यों ही उस राज्य की नींव कमजोर पड़ी, सारे देश में अराजकता फैल गयी, हिन्दू, मुसलमान, मराठे एक-दूसरे से और आपस में भी लड़ने लगे। नतीजा यह हुआ कि उन्होंने विदेशियों के लिए हमारे देश का रास्ता खोल दिया। यदि दिल्ली में एक मजबूत केन्द्रीय राज न हो तो फिर मुगलों का इतिहास हमारे देश में दुहराया जायेगा। अगर सारी फौज उस सरकार की बात न सुने, उसकी आज्ञा को न माने तो क्या हालत हो? यह सोचिये क्या वह फौज देश की रक्षा कर सकेगी? क्या कोई इंतजाम रह जायेगा? खुद सेना ही टुकड़े-टुकड़े में बंट जायेगी। सिख सैनिक पटियाला का पल्ला पकड़ेंगे, गोरखा नेपाल का, राजपूत जयपुर का और मराठे कोल्हापुर का। उनकी तरफ से वे लड़ेंगे। एक होड़ मच जायेगी कि कौन बैठे दिल्ली की तख्त पर। मराठे कहेंगे, अंग्रेजों ने हमसे राज्य लिया, दिल्ली पर हमारा दावा है, राजपूत कहेंगे, हम तो सूर्यवंशी हैं, हिन्दुस्तान का राजमुकुट हमारे लिए सुरक्षित रहना चाहिए। सिक्खों के, गढ़वालियों के अलग-अलग दावे होंगे और इसी होड़ा-होड़ी में देश बर्बाद हो जायेगा। याद रखिये अगर मजबूत राज न हो, तो गुंडों का राज होकर रहेगा। जिसकी लाठी, उसकी भैंस की हुकूमत कायम होकर रहेगी।

दंगों में जिन लोगों ने भाग लिया था, उनके सामने एक तस्वीर थी, बड़ी लुभावनी तस्वीर। वह तस्वीर थी हिन्दू राज कायम करने

की। यह सुनने में अच्छा लगता है। लेकिन, सोचिय तो रहस्य खुले। हिन्दू राज क्या है? उसमें सिक्ख क्यों रहेंगे, हरिजन क्यों रहेंगे, हिन्दुओं में भी किसका राज—मराठों का या राजपूतों का? हिन्दू राज धोखा है, यह सर्वनाश का रास्ता है। जो हिन्दू राज की बात करते हैं, वो हमें आपस में फसाना चाहते हैं। आज हिन्दुस्तान का एक छोटा-सा टुकड़ा निकल गया है, हम आप सभी चिन्तित हैं। लेकिन तो भी बहुत बड़ा हिस्सा एक साथ है। अगर वह हिस्सा भी टुकड़े-टुकड़े हो गया, तो याद रखिये, हमारे सारे बलिदान निष्फल हो जायेंगे। हमारे शहीद आसमान से आंखों में आंसू भरकर हमारी ओर देखेंगे और हम शाप देंगे—हमने ऐसे कपूतों के लिए अपनी जान की कुर्बानी की? तिरंगे झंडे की छाया में हमने गोली खाई, डंडे खाये, हम मिट गये, लेकिन उसकी शान मिटने नहीं दी कि समूचे देश में एक झंडे के नीचे एक राज्य कायम हो। और तुम ऐसे नालायक निकले कि हमारे देश को टुकड़े में बंटवा दिया। अब भगवा झंडा लेकर क्या इस बड़े टुकड़े को तार-तार करना चाहते हो? बताइए, अपने शहीदों की इस उक्ति का हम क्या जवाब देंगे?

याद रखिये, हिन्दू संप्रदायवाद एक बर्रे का छत्ता है, जहर का खोता है, उसे खोदकर मत उकसाइए, नहीं तो आप-हम कहीं के नहीं रहेंगे। आज कांग्रेस की हुकूमत है, राष्ट्रीय सरकार है, तो भी हमारे प्रांत में क्या हो रहा है? राजपूत, भूमिहार, कायस्थ, यादव, कुर्मी जाति की पार्टियां बन रही हैं। आपस में फूट है, तू-तू, मै मै हो रही है, लोग तबाह हैं। फिर अब हिन्दुत्व के नाम पर आप राज्य कायम करेंगे, तो उसमें कितने भेदभाव होंगे, कितनी परेशानियां होंगी—आप सोच सकते हैं।

सुनने में आया, हमारे बहुत से नौजवान भाई राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में भर्ती हो रहे हैं, भाई साफ कहूं कि आप गलत कर रहे हैं। आप गलत रास्ते पर जा रहे हैं। आज मुसलमान समझने लगे हैं कि जिन्ना का रास्ता नाश का रास्ता है। किन्तु बड़ा अफसोस है कि हमारे भोले-भाले उत्साही नौजवान को उसी नाश के रास्ते पर ले जाया जा रहा है।

मैं अपने उन नौजवान साथियों से कहता हूं कि मैं आपका साथी हूं, आपका सेवक हूं। मैं आपसे भाई पूछता हूं कि वह कौन-सी तस्वीर थी, जो हमारे सामने, जिसने हमारी घर की माया-ममता से खींचकर बलिदान के रास्ते पर ला खड़ा किया था? हमारा क्या उद्देश्य था, हजारों तरह की मुसीबतें झेलकर आगे बढ़ने में? क्या हमने उन दिनों सुना था कि आजादी की लड़ाई हिन्दू राज कायम करने के लिए लड़ी जा रही है। क्या हमारे शहीदों के सामने यह हिन्दू या सिक्ख राज्य था? 1942 की क्रांति में जो नौजवान जंगल-जंगल घूमते थे, जो नौजवान देश के बाहर नेताजी की फौज में शामिल हुए, क्या उनके दिमाग में हिन्दू राज था; मुस्लिम राज की तस्वीरें थीं। आजादी की लड़ाई इसीलिए लड़ी गयी थी कि हमारे गरीब देश के लोगों को भर पेट भोजन मिल सके, कपड़े मिले। हमारे लाखों भाई आज सड़कों के किनारे बाल-बच्चों को लेकर जिन्दगी गुजार रहे हैं। हम आजादी इसीलिए चाहते थे कि सबके पास अच्छा घर हो और घर के अंदर अच्छी गृहस्थी। एक अकाल आता है और लाखों आदमी मर जाते हैं। बंगाल के अकाल में 35 लाख लोग मर गये। हम आजादी इसलिए चाहते थे कि एक ऐसा हिन्दुस्तान बनायें, जिसमें अकाल न हो, बीमारी न हो, गरीबी न हो। अस्पताल बने, स्कूल बने। हम अपने लोगों को सभ्य बनायें, सुसंस्कृत बनायें।

हिन्दू राज की बातें करके जो लोग लोग नौजवानों को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में भर्ती करते हैं, उनसे पूछिए, क्या हिन्दू राज नहीं था और आज भी नहीं है। नेपाल में तो हिन्दू राजा ही है, वहां का क्या हाल है, आप जानते हैं? मैं वहां के जेल में कैद था : वहां के बारे में कुछ जानकारी रखता हूं। हमारे देख में विदेशी राजा थे—अखबार निकलते थे, सभा करते थे, उससे लड़ने के लिए संगठन करते थे। लेकिन नेपाल के आपके हिन्दू राज में वहां के शासकों के खिलाफ आप जुबान भी नहीं हिला सकते। यदि ऐसी गुस्ताखी करें, आपकी जबान खींच ली जाये, आप का सर उतार लिया जाये। सिक्ख भाई जरा पटियाला जाकर देखें, सिक्ख राज केसा होता है? मैसूर में हिन्दू राज्य है, जो हिन्दू प्रजा पर गोलियां चलाने में नहीं हिचकता। त्रावणकोर का हिन्दू दीवान पाकिस्तान दोस्ती गांठने चला था। इन हिन्दू राज्यों में एक राजा है, उसके पास सैकड़ों जागीरदार हैं, वे जनता को लूटते हैं, बीसों रानियां रखते हैं, तरह-तरह के दुराचार करते हैं। ऐसे राज्यों और राजाओं के दिन लद गये। आज जनता का जमाना है। आज ऐसी दुनिया देखना चाहते हैं, जिसमें कोई राजमुकुट पहनने वाला नहीं रहे। जो लोग हिन्दू राज की बात करते हैं, वे प्रतिक्रियावादी हैं, वे देश को सैकड़ों वर्ष पीछे ले जाना चाहते हैं।

दिल्ली में एक सज्जन मेरे पास आये और बोले कि हमारा हिन्दू राज से मतलब है राम राज्य। मैंने उनसे कहा...राम राज्य की शक्ल में जो राज्य कायम करना चाहेगा, वह पड़ोसियों के घर में आग नहीं लगायेगा। लूटमार नहीं करेगा, आम परायी औरतों की इज्जत नहीं लूटेगा, बच्चों को कत्ल नहीं करेगा। आग लगाकर, बलात्कार करके, कत्लेआम करके राम राज्य नहीं कायम किया जा सकता, यह जानवरों का राज होगा, डकैतों का राज होगा, लठैतों का राज होगा। आप राम राज्य कायम करना चाहते हैं तो हिन्दुस्तान में एक ही व्यक्ति है, जिसके चरणों के नीचे आपको बैठना होगा, जिसके चरण -चिह्नों पर चलना होगा। वह एक व्यक्ति है, जो देश को राम राज्य की ओर ले जाना चाहता है, उसकी तपस्या ने ही हमें आजादी दिलायी है, उसके तपोबल से हमारा बूढ़ा देश संसार के देशों के सामने सर ऊंचा करके खड़ा हुआ है। उसी के उपदेशों और आदेशों पर चलकर हम रामराज्य कायम कर सकते हैं, बाकी लोग तो हमें धोखा देना चाहते हैं।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अंदर गरीब नौजवान, स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थी और छोटे-छोटे रोजगारियों और व्यापारियों के बच्चे शामिल हो रहे हैं। उन बेचारों को यह पता नहीं है कि संघ के पीछे कौन-सी ताकत काम कर रही है। देश की आजादी के लिए किसी एक भी राजा ने काम नहीं किया—वे अंग्रेज के जूते चाटते रहे। सिर्फ गिने-चुने चंद लोगों ने

देश का साथ दिया। बाकी लोग जिस समय देश जीवन-मरण के बीच में था, चोरबाजारी और मुनाफाखोरी से जेब गर्म कर रहे थे। गांधीजी ने पिछली लड़ाई में अंग्रेजों का कोई मदद नहीं करने को कहा, न एक पाई, न एक भाई—यह था राष्ट्र का नारा। लेकिन, ये जमींदार और साहूकार राष्ट्र की पुकार सुन सके? जेल से निकलकर मैंने भी इनसे बार-बार अपीलें की; लेकिन कौन सुनता है। ये तो लड़ाई में लखपति से करोड़पति बनते रहे। हिन्दू सभा या राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के लोग इन दिनों कहां थे? जब फांसी और गोली के मौके थे, ये तो बिलों में घुसे रहे। लेकिन आज आजादी मिलते ही बाहर आये हैं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पीछे करोड़पति हैं, राजे-महाराजे हैं, उनका रुपया है, उनका हाथ है। उनके छुपे हुए मतलब समझना कोई मुश्किल नहीं है। इन राजों-महाराजों, जमींदारों-साहूकारों को हिन्दुस्तान की जनता से खतरा है। आजादी के बाद खतरा बढ़ गया है। वे देख रहे हैं—तो फिर इनकी क्या विसात? तब उन्होंने एक नई चाल चली है। इनकी नई चाल यह है कि जनता को पथभ्रष्ट कर दें, देश की प्रगतिशील शक्तियों को दूसरे रुख पर मोड़ दें। ऐसा समां पैदा कर दें कि मजदूर राज, किसान राज की बात हवा में उड़ जाये और हिन्दू राज्य के भूल-भुलैया में सब लोग पड़ जायें। तिरंगे को लोग भूल जायें और भगवे झंडे के नीचे सारी प्रगतिशील शक्तियां एकत्र होकर प्रतिक्रिया के पथ की ओर मुड़ जायें। यह भगवा झंडा देश के लिए खतरा है। गरीबों के लिए खतरा है, आपके लिए खतरा है। हम इस खतरे का सामना करें। हम साफ बातें अपने नौजवानों से कहें। हमारे नौजवानों का हृदय साफ है। क्रांति और प्रगतिशीलता उनकी नसों में है। वे बहकावे में नहीं जा सकते और जो फंस गये हैं, वे भी इस माया जाल को चढ़कर निकल आयेंगे।

सांप्रदायिकता आजादी पाने के पहले से हमारी दुश्मन थी। अंग्रेजों ने इसको पाला-पोसा, इसकी मदद ली। फिरकापरस्ती के चलते ही देश दो टुकड़ों में बंटा। हमने अंग्रेजों पर विजय प्राप्त की, पर पूरी नहीं। कितने दुःख की बात है, आज भी सांप्रदायिकता हमारी दुश्मन बनी हुई है। कल उसके शिकार मुसलमान थे, हिन्दू होने जा रहे हैं। यह फिर हममें झगड़े पैदा कर रही है। एक बार हम आपस में लड़े तो डेढ़ सौ बरसों तक गुलाम रहे। यदि फिर हमने गलती की, तो हमारे देश पर क्या आफत आयेगी, इसकी कल्पना से घबरा जाता हूं।

देश पर संकट है। यह बार-बार मैं कहता हूं कि विश्वास रखें, यह हिन्दू और मुसलमान का झगड़ा नहीं है। इन झगड़ों की आड़ में दूसरी ताकतें काम कर रही हैं। दिल्ली में ऐसे हिन्दू नौजवान मिले, जो कहते हैं—जिस दिन जवाहरलाल नेहरू की लाश सड़कों पर होगी, उस दिन हिन्दुस्तान की लाश संसार के सामने लावारिश पड़ी होगी।

आप पूछ सकते हैं, हिन्दुओं पर इतने अत्याचार हुए, उनका क्या जवाब? क्या बैठे रहें? इसका जवाब सीधा है। यदि आप समझते हैं कि आप जुल्म से जुल्म को बंद कर सकेंगे, तो यह नादानी है। क्या आप दस करोड़ मुसलमान को मिटा सकते हैं? जो 'हां कहेंगे वो पागल हैं। इनको मिटाने के लिए आपको भी मिट जाना पड़ेगा। जिन बातों के लिए हम जिन्ना साहब को गाली दें, वो हम खुद करें। किन्तु उसका नतीजा? जब बिहार में दंगा हुआ, तो लोग कहते थे—शाबास बिहारियों, अच्छा जवाब दिया, अब दंगे रुक जायेंगे। क्या दंगे रुक गये? हमने उस समय जो किया, उससे पाकिस्तान की जड़ मजबूत हुई। दुनिया मान लिया कि बिहार ऐसे कांग्रेसी सूबा में ऐसा हो सकता है, तो दूसरी जगह क्या नहीं हो सकता? पाकिस्तान बनकर रहा।

मुसलमानों को यहां से हटा दिया जाये, जरा इसके बारे में सोचें। मैंने हमेशा लोगों की मुखालफत की। जिन्ना को मीरजाफर कहा। पंजाब में मुसलमानों मुसलमानों की आबादी 70 से 80 सैकड़े तक है, उन जगहों पर माइन जीना को मीरजाफर कहा। किन्तु, मैंने जिन्ना या लीग को सभी मुसलमानों का प्रतिनिधि नहीं कहा। कांग्रेस के अंदर मुसलमान हैं और बड़े-बड़े मुसलमान हैं, क्रांतिकारी आंदोलन में रामप्रसाद बिस्मिल फांसी चढ़े, तो अशफाक भी फांसी पर चढ़ा, आजाद हिन्द फौज में सहगल थे, तो शाहनवाज भी थे। हमारे पार्टी में ऐसे मुलसमान हैं, जिनपर हमें नाज है। फिर भी हम मुस्लिम लीग और मुसलमान को एक कैसे समझते हैं? हां मुसलमान जनता को भड़काया गया है, उसे गुमराह किया गया, हमसे भी गलती हुई कि हम मुसलमान जनता तक नहीं पहुंच सके। नतीजा हुआ कि लीग ने हमें मनमाना नचाया। किन्तु, हम उन्हें आज भी समझा सकते हैं, उनको अपनी तर कर ले सकते हैं। मुझे विश्वास है। किन्तु मैं साफ कह दूं, मुस्लिम लीग के लीडर आज हमारे नेताओं के साथ और हिन्दुस्तान में मुसलमान खुशहाल घूम रहे हैं और हिन्दुस्तान के प्रति राजभक्ति की कसमें खाते हैं, उनपर मेरा विश्वास नहीं है। खलीकुज्जमा साहब को आपने देखा न, उन्होंने राष्ट्रीय झंडे को सलाम किया। राजभक्ति की कसमें खायीं, किन्तु करांची पहुंचते ही उनकी राजभक्ति हवा हो गयी। आप ऐसे लीगी लीडरों को हिन्दुस्तान से निकाल दीजिये। मुझे कोई उज्र नहीं। किन्तु आप साढ़े चार करोड़ मुसलमानों को किस तरह हटायेंगे, इस पर सोचिये। आज दस लाख शरणार्थियों को हटाने में आपकी सरकार को दो करोड़ रोजाना खर्च होगा। साढ़े चार करोड़ को हटाने में कितना खर्च होगा, यह सोचिये। और यह पैसे आयेंगे कहां से? आपकी ही जेब से तो! फिर उनके धोने-धुलने में परेशानी होगी। सारा इंतजाम ताखड़-पाखड़ हो जायेगा। उसकी कल्पना भी आप कीजिए और अंत में एक बात और खयाल कीजिए—अपना घर सबको प्यार है। जिन साढ़े चार करोड़ को संगीन की नोक पर निकालेंगे, वे आपके जानों की दुश्मन बन जायेंगे और पाकिस्तान के साढ़े चार करोड़ मुसलमानों से मिलकर हिन्दुस्तान के खिलाफ इतना बड़ा जबरदस्त मोर्चा बनायेंगे कि हमारा सारा ध्यान लड़ने में ही लगा रहेगा। क्योंकि वे लोग अपने घरों पर फिर से कब्जा करने के लिए छटपटाते रहेंगे। याद रखिये, प्रतिशोध की भवन सभी भावनाओं से प्रबल होती है। हमें ठंडे दिमाग से सोचना है। और एक ऐसी परिस्थिति पैदा करनी है, जिसमें टूटा हुआ

हिन्दुस्तान फिर से एक हो सके। यह तभी हो सकता है जब कि हम हिन्दुस्तान के मुसलमानों के दिल को जीतें और दिल्ली के तख्त पर एक ऐसा राज्य कायम करें, जो जनता का राज्य हो, सही माने में किसान और मजदूर का राज हो, जब दिल्ली में किसान मजदूर का राज्य कायम होगा और हिन्दुस्तान के मुसलमान भी खुशहाल होंगे, तब पाकिस्तान के मुसलमान सोचने लगेंगे कि यह क्या? हमसे कहा गया था, दिल्ली में हिन्दुओं का राज है, लेकिन वहां तो हिन्दुओं का नहीं, गरीबों का राज्य है। तो वे फिर अपने यहां नवाबों और सरमायेदारों का राज्य बर्दाश्त नहीं करेंगे। वे इस्फहानी और ममदोत के यथार्थ रूप को समझ सकेंगे और उन्हें तख्त से उतार डालेंगे। वहां भी गरीबों का राज्य होगा। फिर पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के गरीब हाथ मिलायेंगे, उनका दिल एक होगा, उनका राज्य एक होगा। अपने देश में मुसलमानों को हटाकर आप यह तस्वीर नहीं खिंच सकते।

ठंडे दिल से सोचिये कांग्रेस ने क्या कहा था—सभी हिन्दुस्तानी एक हैं, भाई-भाई हैं, हिन्दू-मुसलमान, सिख-पारसी सभी भारत माता की संतान हैं। गांधीजी ने 40 करोड़ को एक सूत्र में बांधने की कोशिश की। यह तो जिन्ना ने कहा था कि हम अलग-अलग हैं और इसलिए कहा था कि वह अंग्रेजों के इशारे पर नाचते रहे। लेकिन आज अजीब हालत है। हिन्दू लोग मुस्लिम लीगी बनते जा रहे हैं और मुसलमान कांग्रेस की ओर आ रहे हैं। हजारों साल से लोग हमारे देश में आते रहे। आर्य, हूण, शक, मुगल, पठान सब आये और एक हो गये। किन्तु यदि हमने उन्हें अलग माना, तो निश्चय ही लीगी का झंडा अपने हाथ में ले लिया, हम जिन्ना की फौज में शामिल हो गये। जिन्ना की फौज आज टूट रही है, क्योंकि मुसलमान अब समझने लगे हैं कि उनको धोखा हुआ। वे भक्ति की शपथ लेकर कांग्रेस की फौज में शामिल होने को आतुर हैं। जिन्ना का रास्ता पकड़कर हम सर्वनाश की ओर जायेंगे, यह याद रखिये।

देश के सामने नाजुक हालत है। हम अपने नौजवान साथियों से कसकर अपील कर रहे हैं—नौजवानों, आपने इंकलाब जिन्दाबाद का नारा लगाया, वह सफल हुआ। किन्तु सफलता आधी ही मिली है। राजनीतिक इंकलाब में हम सफल हुए, हम आजाद हैं। लेकिन दूसरा इंकलाब बाकी है। हमें सामाजिक क्रांति करनी है। गरीबी, सामंतवादी और जाति-भेद को दूर करना है। जाति-भेद को दूर किये बिना हम उन्नति की ओर नहीं बढ़ सकते। आजादी के बाद समाजवाद ही एक रास्ता रह गया है। सारी दुनिया में समाजवाद की लहर है। पूंजीवाद बूढ़ा हो चला है। यूरोप में इसका जन्म हुआ, वहां इसके दफन की तैयारी चल रही है। हिन्दुस्तान में समाजवाद कायम करना है, तो ऊंच-नीच जात-पाति का भेद हटाना होगा। सांप्रदायिकता और फिरकापरस्ती को लात मारनी होगी। आप ही नौजवानों पर आशा है। अफसोस कि आप धोखे में आकर भगवा के पीछे दौड़ रहे हैं। आपका झंडा तिरंगा है। जिसे आपने खून से रंगा है। इस झंडे को हटाकर, कांग्रेस को मिटाकर आप हिन्दू राज्य भी कायम नहीं कर सकते। सारा देश टुकड़े-टुकड़े में बंट जायेगा। दिल्ली का गौरव नष्ट हो जायेगा। राजे-महाराजे, पूंजीपतियों की चांदी होगी, बाकी पिस जायेंगे। आप गलत जगह पर खड़े न हों। जो लोग तिरंगे के सामने सर नहीं झुकाते, वे गद्दार हैं, देशद्रोही हैं। आइए, देशद्रोही को दूर भगाएं। आज भारत माता कीचड़ में पड़ी है। उसे हिमालय के शिखर पर रखें और उसके बर्दहस्त की छाया तले एक ऐसा राज्य बनायें, जो जनता का राज्य हो, किसानों और मजदूरों का राज्य हो। जिस राज्य में सब सुखी रहें, सब सानंद रहें।

('जयप्रकाश की विचारधारा', सं.-रामवृक्ष बेनीपुरी) ❑

गांधी के हत्यारे फिर पैदा हो गये हैं

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 71वें शहादत दिवस पर 30 जनवरी 2019 को गांधीजी की कागज व कपड़ों से बनी प्रतिमा को अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश) में अखिल भारत हिन्दू महासभा के कार्यकर्ताओं द्वारा तीन गोलियां दागकर खून बहाया गया, बेहूदी टिप्पणी की गयी और उपस्थित लोगों में मिठाइयां बांटकर शौर्य मनाया गया। हत्यारे नाथूराम गोडसे के नाम का जय-जयकार करके राष्ट्रपिता की सार्वजनिक रूप से भर्त्सना की गयी। इन लोगों ने यह भी कहा कि वे 30 जनवरी को हर साल इसी तरह गांधी को गोली मारेंगे।

इन लोगों ने इस कृति का बाकायदा वीडीओ बनाकर देशभर में वायरल भी किया। कल 30 जनवरी को दिनभर इसे अनेक टी. वी. चैनलों ओर सोशल मीडिया के माध्यम से यह वीडीओ करोड़ों लोगों को दिखाया गया।

सर्व सेवा संघ (अ. भा. सर्वोदय मंडल) के अध्यक्ष **श्री महादेव विद्रोही** ने राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के नाम लिखे एक पत्र में कहा है कि राष्ट्रपिता के शहादत दिवस पर हमें उनके जीवन-मूल्यों व उपासना को लेकर गंभीर चिन्तन की आवश्यकता है। आज जब दुनिया में गांधीजी के विचार व जीवन पर मानवी समाज की संरचना को पुनर्स्थापित करने की बात हो रही है, ऐसे में हमारे ही देश में हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी के स्मृति-दिवस पर इस तरह की अत्यंत घृणास्पद कृति बेहद क्लेशदायक है। ये वही तत्त्व हैं, जिन्होंने पिछले दिनों उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री को लिखकर हत्यारे गोडसे के नाम पर मेरठ का नाम गोसे नगर करने की मांग की गयी है।

हम इस अमानवीय कृति का निषेध करते हुए अपना सामूहिक विरोध प्रकट करते हैं।

हम सरकार से हत्या का गुणगान करने वाले इस कृत्य के विरोध में तुरंत एवं शीघ्र कार्रवाई करने की मांग करते हैं। हम यह भी जानना चाहते हैं कि :

1. इस संबंध में भारत सरकार की क्या भूमिका है?
2. मानवता के इन अपराधियों के विरुद्ध क्या कार्रवाई की जायेगी?
3. सरकार राष्ट्रपिता के जाहिर भर्त्सना के लिए क्या कोई प्रायश्चित करेगी?

–मारोती गावंडे, कार्यालय मंत्री

महामानव गांधीजी

❑ जवाहरलाल नेहरू

गांधीजी को जीवन में जो पूर्णत्व मिला, वैसा शाहद ही किसी देश के इतिहास में किसी को मिला हो। जिस किसी चीज को बापूजी ने स्पर्श किया, उसे मौलिकता प्राप्त हुई। वह सुवर्णमय हो गयी। गीता के सिद्धांत के अनुसार फल की अपेक्षा न करते हुए उन्होंने कार्य किया और फल उनके पीछे दौड़ता आया।

एक बड़ी कीमिया उन्होंने की

उनका दीर्घ जीवन, उस जीवन में किये कष्टदायक काम, निश्चित स्वरूप के जीवनक्रम में ही किये विलक्षण हिम्मत के प्रयोग, इस सबकी ओर देखें, तो ध्यान में आयेगा कि उनके जीवन में कहीं भी विसंवादी सुर सुनायी नहीं देते। विविध क्षेत्र का उनका कार्य मानो स्वरैक्य ही था। उनका प्रत्येक शब्द और हर हलचल मानो सुसंवादी स्वरमालिका थी। जीवन की कला उन्होंने आत्मसात् कर ली थी। जैसे-जैसे मेरा उनसे संपर्क बढ़ता गया, वैसे-वैसे इसकी प्रतीति होने लगी कि उनकी देह, उस देह में निवास करने वाली शक्तिमान आत्मा का कार्यवाहक साधन है। हम उनके प्रवचन सुनने लगे, उनको देखते ही उनकी देह को भूलने लगे, वे जहां बैठते वह हमें मंदिर लगने लगा और वे जहां चलते वह पवित्र भूमि लगने लगी।

उनकी मृत्यु में भी उज्ज्वलता और कलतात्मकता थी। बापूजी जिस प्रकार का जीवन जीये उस जीवन-दृष्टि को ध्यान में लें, तो हम सर्वार्थ से कह सकते हैं कि उनकी मृत्यु उनके जीवनक्रम का कलश थी। सामर्थ्य के सारे सूत्र हाथ में रहते समय उनको मृत्यु आयी। इसमें कोई शक नहीं कि प्रार्थना के क्षण में मृत्यु आयी, इसका उन्हें संतोष रहा होगा। जिस एकता के लिए उन्होंने जीवनभर अविरत कार्य किया, पूरा जीवन समर्पित किया और जीवन के अंत में भी जिस निष्ठा को खोया नहीं, उस निष्ठा की परिपूर्णता के लिए उन्होंने हौतात्म्य स्वीकारा। एक निमिषभर में मृत्यु आयी। उन्होंने हमारे मन में जिस चित्र का निर्माण किया है, वह चित्र कभी मिटेगा नहीं।

पर एक उससे भी बड़ी कीमिया उन्होंने की। हमारे मन और बुद्धि की तह में जाकर उसे उन्होंने संस्कार दिये! उनके कर्तृत्व-काल में तैयार हुई पीढ़ी काल के प्रवाह में लुप्त हो जायेगी। परंतु उस पीढ़ी को उन्होंने जो सिखावन दी है, वह आगे की अनेक पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगी। क्योंकि गांधीजी की सिखावन भारतीय आत्मा का एक भाग बनकर रही है। वह भारत की अस्मिता है।

उनके नेत्रों में कोई 'अज्ञात' था

उस छोटे-से मनुष्य की कमजोर देह में फौलाद जैसा कुछ था। उनकी वह देह किसी भी ताकतवर शक्ति के सामने झुकी नहीं। उनके चेहरे पर खूबसूरती नहीं थी, देह पर सिर्फ एक छोटा-सा कपड़ा कमर पर लपेटा रहता, पर उनको देखते ही उनके शाही तेज से हम प्रभावित हो जाते, उनके सामने विनम्र हो जाते। और जिस समय वे कोई आदेश देते, उस समय वह मानना ही पड़ता। उसमें वे किसी को भी माफ नहीं करते। उनकी शांत, गहरी आंखें सामने वाले के अंतर को आजमा लेतीं। उनकी स्पष्ट आवाज सामने वाले के दिल में भावनात्मक प्रतिसाद उत्पन्न करती। प्रवचन करते समय उनकी मोहकता और आकर्षकता की ऐसी छाप पड़ती कि हर कोई, चाहे एक श्रोता हो या हजारों हों, उनके साथ तद्रूप हो जाता। उसका कारण यह नहीं था कि गांधीजी की वक्तृत्वशैली से या शब्दाडंबर से वे सम्मोहित हो जाते। गांधीजी की भाषा सादी, सरल है, नाहक विस्तार या अनावश्यक शब्द उसमें नहीं रहता है। लोगों पर प्रभाव तो पड़ता है उनकी संदेहरहित प्रामाणिकता और व्यक्तित्व-वैशिष्ट्य का! उनका प्रवचन सुनते हुए प्रतीति होती है कि इस छोटी-सी मूर्ति में प्रचंड आंतरिक सामर्थ्य भरी पड़ी है।

गांधीजी एक पहेली हैं। यह नहीं कि ब्रिटिश सरकार के लिए ही वह पहेली थे,

उनके स्वकीयों और सहकारियों के सामने भी वे एक पहेली ही बनकर रहे। अन्य देशों में गांधीजी जैसे धार्मिक द्रष्टा को कहीं स्थान ही नहीं मिलता। लेकिन ऐसे धर्मात्माओं की भाषा भारत अभी भी समझ सकता है। इसीलिए गांधीजी पाप-पुण्य की, सत्य और अहिंसा की बातें बोल सके। गांधीजी अलग ही धातु के बने थे। उनके नेत्रों से हमेशा को 'अज्ञात' आंखें खोलकर हमें देखा करता।

उन्होंने अनुशासन दिया

गांधीजी के साहित्य या सुवचनों से भी उनके व्यक्तित्व या स्वभाव का ख्याल नहीं आता। गांधीजी ने देश की जो सेवा की है, वह अभूतपूर्व है। अपने देश-बांधवों के दिल में उन्होंने हिम्मत और पौरुष पैदा किया। जनता को अहिंसा और सहनशीलता की सिखावन दी। ध्येय के लिए त्याग की परिसीमा खुशी-खुशी प्राप्त करने की सिखावन दी। लोगों में स्वाभिमान पैदा किया। उनकी साफ राय थी कि धर्म चारित्र्य की मजबूत नींव है। एक बार उन्होंने कहा था, ''निर्भयता के बिना नैतिकता, धर्म और प्रेम को जीवन में कोई स्थान नहीं। सत्य या प्रेम का मार्ग भय की भावना में से दिखायी नहीं देता।'' ध्येय तक पहुंचना हो तो उस कार्य की प्रतिज्ञा और भरोसा अनुशासन है। मानवी जीवन में त्याग, अनुशासन, या मनोनिग्रह के बिना दूसरी मुक्ति नहीं। अनुशासन के बिना केवल त्याग निरर्थक है, यह उनका कहना था।

उनका हास्य जितना आनंददायक था, उतना ही असरकारक भी था। उनकी वह हंसी उनके मुक्त मन की प्रतीति करवाती। उनके स्वभाव में बालक की निष्पापता का दर्शन होता। बच्चे के स्वभाव में जो मुग्धता, मोहनीयता होती है, उसका भी उनमें अनुभव होता था। किसी भी जगह वे प्रवेश करते, उनके पदार्पण के साथ एक स्वच्छ हवा की लहर आती और वातावरण को उज्ज्वल बना देती। अपनी जीवन-पद्धति में उन्होंने अपने विचार के अनुसार जीवन-सौंदर्य का निर्माण किया था। उनकी हर हलचल में अर्थ था, सौंदर्य था।

पराभव में भी प्रकाशमान रहे

अपने विचार और सैद्धांतिक भूमिका के अनुसार चलने की गांधीजी की स्वतंत्र नीति थी। इस नीति से अपने जीवन-विषयक दर्शन को मोड़ देते हुए उस दर्शन का विकास वे करते थे। जो नैतिक मूल्य उन्होंने निश्चित किये थे, उनको ध्यान में रखकर ही वे अपने जीवन-विषयक दर्शन की ओर देखते थे। हर बात को और खुद को भी वे इसी मूलभूत मानक पर कसते थे। इसी कारण उनके कार्य और जीवन का पूर्ण मेल हुआ दिखायी देता है। उनके जीवन में जब-जब पराभव के प्रसंग आये, तब-तब हमें प्रतीति हुई कि उनका व्यक्तित्व प्रकाशमान हुआ।

करोड़ों की आकांक्षाओं की मूर्ति

खुद पर पूर्ण विश्वास, विलक्षण शक्ति की जोड़, हर एक को स्वतंत्रता और समानता प्राप्त करा देने का ध्येय, गरीबों की जीवन-दृष्टि से इन ध्येय-नीतियों का उपयोग करने की मनोभूमिका, इन कारणों से सर्वसाधारण जनता गांधीजी की ओर आकर्षित हुई, जैसे लोहचुंबक की ओर होता है।

लाखों-करोड़ों की आशा-आकांक्षाओं की गांधीजी प्रत्यक्ष मूर्ति ही थे! भारत की परिस्थिति का उन्हें अंतःस्फूर्त ज्ञान था। मनुष्य के मनोविज्ञान का उनका सूक्ष्म अभ्यास था। इसलिए किसी भी क्षण किसी भी समस्या में हस्तक्षेप करने लायक उनका ज्ञान था। उनके जैसा महान क्रांतिकारी दुनिया में अद्वितीय ही माना जायेगा।

उनका ऐसा अद्वितीय व्यक्तित्व था। सर्व-साधारण नाप से या तर्कशास्त्र के रूढ़ नियमों के आधार से उनके व्यक्तित्व का मूल्यांकन करना संभव नहीं।

('धरती' से एक अंश) ❑

बापू को निरंतर अपने साथ देखता हूं

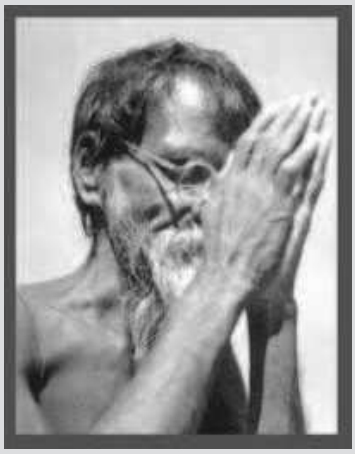

''बापू का प्रेम और विश्वास मैंने बहुत पाया है। मैंने भी अपना सर्वस्व उनके चरणों में समर्पित किया था। मेरी अंतरात्मा गवाही देती है कि बापू ने जो अहिंसा का, प्रेम का मार्ग दिखाया है, उस पर चलने की मैंने पूरी-पूरी कोशिश की है। मैंने प्रयत्नों की पराकाष्ठा कर दी। एक क्षण भी ऐसा याद नहीं कि मैं असावधान रहा हूं। बापू के जाने के बाद मैं बापू का ही काम कर रहा हूं, इसमें मुझे रत्तीभर शंका नहीं है। इस काम से मेरे हृदय में अपार आनंद होता है और उसमें मैं 'बापू को निरंतर अपने साथ देखता हूं'। मैं मानता हूं कि मेरे चिन्तन में बापू का सार-रूप अंश है। बापू के समय की अपेक्षा आज बहुत अधिक मैं उनके सान्निध्य में हूं। उन्होंने जो कुछ कहा है, उस संबंध में चिन्तन करने में आज मुझे उनकी ओर से जितनी मदद मिली है, उतनी और किसी से नहीं मिलती।''

–विनोबा

गांधी का जब परम भक्त बन गया!

❑ डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

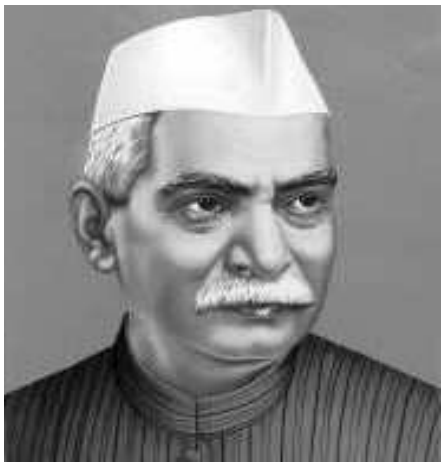

सन् 1916 में लखनऊ की कांग्रेस बड़े समारोह के साथ हुई थी। 1907 से जब कांग्रेस में दो दल हो गये और गरम पार्टी कांग्रेस से अलग हो गयी, तब से कांग्रेस की लोकप्रियता कम हो गयी थी। उसके सालाना जलसों में भी कम लोग आया करते थे। यहां तक कि 1912 में जब पटना में कांग्रेस हुई, प्रतिनिधियों की संख्या बहुत कम थी। देश हितैषियों की कोशिश थी कि दोनों दल मिला दिये जायें, जिससे कांग्रेस में फिर से जान आ जाये। यह प्रयत्न चलता रहा, पर यह सफल हुआ 1916 की कांग्रेस में ही। इसमें सभी विचार के लोग उपस्थित थे। एक तरफ लोकमान्य तिलक दल-बल के साथ आये थे। दूसरी ओर नरम दल के प्रायः सभी नेता उपस्थित थे। बसेंट भी आयी थीं। उसी साल मुस्लिम लीग के साथ समझौता भी हुआ। मुसलमान भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। महात्मा गांधी भी इस कांग्रेस में आये थे। वे सन् 1915 में ही दक्षिण अफ्रीका से लौटकर सारे देश में भ्रमण करते रहे। पर इस कांग्रेस में वे किसी प्रस्ताव पर बोले नहीं।

बिहार के भी प्रतिनिधि अच्छी संख्या में लखनऊ पहुंचे थे। उनमें कुछ लोग चंपारण के थे। इनमें एक देहाती किसान राजकुमार शुक्ल थे। वे थोड़ी हिन्दी जानते थे, पर और कोई भाषा नहीं। वे उन लोगों में थे, जिन्होंने खुद नीलवरों (निलहे गोरों) के हाथ से दुख पाया था। चंपारण जिले की सताई हुई प्रजा की ओर से वे कांग्रेस में पहुंचे थे। उनसे मेरी मुलाकात कुछ पहले से ही थी, क्योंकि जब कभी कोई मुकदमा हाईकोर्ट तक पहुंच पाता था तो मैं फीस का ख्याल न करके उन लोगों के वकील की हैसियत से काम कर दिया करता था। पर इस काम में बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद उन लोगों की बहुत मदद किया करते थे। इसलिए उन लोगों का विशेष परिचय उन्हीं से था। चंपारण जिले की परिस्थिति से वे बहुत ज्यादा परिचित थे।

उस समय बिहार के प्रतिनिधि दो विषयों में विशेष दिलचस्पी रखते थे और कांग्रेस में उन पर प्रस्ताव पास कराना चाहते थे—एक पटना यूनिवर्सिटी बिल और दूसरा चंपारण का नीलवर-प्रश्न। राजकुमार शुक्ल, बाबू ब्रजकिशोर प्रभृति बहुत चाहते थे कि कांग्रेस इस सवाल पर भी प्रस्ताव करे। बिहार प्रांतीय कान्फ्रेंस के सभापति की हैसियत से बाबू ब्रजकिशोर इस प्रश्न पर कड़ी आलोचना कर चुके थे। उस कान्फ्रेंस में एक प्रस्ताव भी पास हो चुका था। कौंसिल के वे मेम्बर थे। उन्होंने वहां भी इस समस्या पर प्रश्न पूछे थे और एक प्रस्ताव भी रखा था। कौंसिल में और बाहर भी, एक प्रकार से इस विषय को अपना लक्ष्य बनाकर, विधान के अंदर इस पर जो काम हो सकता था, वे कर रहे थे। जहां तक हो सकता था, मुकदमों में भी वहां की रियाया की मदद किया करते थे।

यह बात बिहार के लोगों को मालूम थी कि कर्मवीर गांधी दक्षिण अफ्रीका में बहुत-कुछ कर रहे थे। जहां तक हो सकता था, मुकदमों में भी वहां की रियाया की मदद किया करते थे।

यह बात बिहार के लोगों को मालूम थी कि कर्मवीर गांधी दक्षिण अफ्रीका में बहुत-कुछ करके हिन्दुस्तान आये हैं, इसलिए उनसे इस काम में मदद लेनी चाहिए। राजकुमार शुक्ल आदि उनसे मिले और चंपारण का कुछ हाल कह सुनाया। उन्होंने कुछ दिलचस्पी जाहिर की। इधर से कहा गया कि कांग्रेस में वे एक प्रस्ताव उपस्थित करें। उन्होंने इनकार कर दिया; कहा कि जब तक वहां की स्थिति वे स्वयं देखकर और जांचकर अपने को संतुष्ट नहीं कर लेंगे, प्रस्ताव उपस्थित नहीं कर सकते। जोर देने पर उन्होंने कहा कि वहां जाकर स्थिति देखने के लिए वे तैयार हैं और कुछ दिनों के बाद वहां जायेंगे भी। कांग्रेस में प्रस्ताव बाबू ब्रजकिशोर ने उपस्थित किया। राजकुमार शुक्ल भी उस पर कुछ बोले। यह शायद पहला ही मौका था जब एक निरा देहाती किसान कांग्रेस के मंच से किसी प्रस्ताव पर बोला हो। कांग्रेस ने प्रस्ताव स्वीकृत किया।

जब बिहार के प्रतिनिधि, बाबू ब्रजकिशोर के साथ गांधीजी के पास गये थे, तब मैं उनके साथ नहीं था। यह किस्सा मैंने पीछे सुना। मैं गांधीजी के बारे में बहुत जानकारी नहीं रखता था। दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने जो कुछ किया था, उसकी जानकारी भी बहुत थोड़ी रखता था। केवल इतना ही जानता था कि उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में कोई बड़ा और अच्छा काम किया है। यह नहीं जानता था कि वे देश के नामी नेताओं की तरह एक बड़े नेता हैं। राजकुमार शुक्ल ने न मालूम क्यों उन पर इतना विश्वास किया और उनके पास पहुंचकर उनको चंपारण आने के लिए राजी किया।

लखनऊ-कांग्रेस के कुछ दिनों बाद गांधीजी कलकत्ते आये। उन्होंने राजकुमार शुक्ल को पत्र लिखा कि कलकत्ते में मुझसे मिलो—वहां से हम दोनों साथ ही चंपारण चलेंगे। देहात में पत्र देर करके पहुंचा। राजकुमार शुक्ल के पास पत्र पहुंचने के पहले ही गांधीजी कलकत्ते से वापस चले गये थे। राजकुमार शुक्ल ने फिर पत्र लिखा। गांधीजी ने उत्तर दिया कि अखिल भारतीय कांग्रेस

कमेटी की बैठक कलकत्ते में होगी। वे उस बैठक में उपस्थित होंगे। राजकुमार शुक्ल को वहीं उनसे भेंट करनी चाहिए। मैं भी उस बैठक में उपस्थित था। इत्तफाक से मैं गांधीजी के बगल में ही एक कुर्सी पर बैठा था। पर मुझे यह मालूम नहीं था कि राजकुमार शुक्ल से उनका पत्र-व्यवहार हुआ है और वे वहां से बिहार आने वाले हैं। अपनी आदत से मजबूर मैं किसी से जबरदस्ती या आगे बढ़कर जान-पहचान करना नहीं जानता। मैंने गांधीजी से न कुछ पूछा और न एक शब्द भी मैं बोला। उस कमेटी में लोगों ने, और विशेष करके अध्यक्ष श्री अंबिकाचरण मजूमदार ने बहुत जोर दिया कि गांधीजी कांग्रेस-मंत्री हो जायें। पर गांधीजी ने इनकार कर दिया। मैं बैठे-बैठे सब देखता रहा। कभी-कभी मैं यह सोचता था कि जब लोगों का इतना आग्रह है तो उनका इनकार करना मुनासिब नहीं है। पर मैं कुछ बोल नहीं सकता था।

कमेटी का काम खतम होने पर गांधीजी बाहर निकले, राजकुमार शुक्ल उनका इंतजार कर रहे थे। उसी रात को वे राजकुमार शुक्ल के साथ सीधे पटना चले आये। मैं कुछ देर करके बाहर आया। इसलिए उन लोगों से मुलाकात नहीं हुई। गांधीजी भी नहीं जानते थे कि मैं बिहार का ही रहने वाला हूं और राजकुमार शुक्ल पटना में मेरे ही घर पर उनको ले जाने वाले हैं! इसलिए वे भी मुझसे कुछ नहीं बोले।

यह बैठक ईस्टर की छुट्टियों में हुई थी। मैं कलकत्ते से जगन्नाथपुरी चला गया। गांधीजी पटना आ गये। राजकुमार शुक्ल उनको मेरे घर पर ले गये। पर वहां एक नौकर के सिवा और कोई था ही नहीं। नौकर ने समझा कि ये कोई देहाती मुवक्किल आये हैं। इसलिए उसने उनको किसी बाहर के कमरे में ठहरा दिया और किसी किस्म के आदर-सत्कार के बदले कुछ तिरस्कार का ही भाव दिखलाया। गांधीजी कुछ देर ठहरे। इतने में मजहरूलहक साहब को खबर हुई। वे खुद आकर उनको अपने घर पर ले गये। संध्या को गांधीजी मुजफ्फरपुर पहुंचे। वहां आचार्य कृपलानी के पास ठहरे। वहां कुछ लोगों से भेंट-मुलाकात करके उनका इरादा था कि चंपारण जायें। बाबू ब्रजकिशोर, जो दरभंगा में वकालत किया करते थे, तार देकर बुला लिये गये थे।

गांधीजी का इरादा था कि वे चंपारण में जाकर वहां के रैयतों से मिलें और उनका दुख उन्हीं के मुंह से सुनें। पर वहां की ग्रामीण बोली वे समझ नहीं सकते थे। इसलिए वे चाहते थे कि कोई दुभाषिया का काम करने के लिए उनके साथ जाये। उनका विचार था कि दो-चार दिनों में सब बातें मालूम हो जायेंगी। राजकुमार शुक्ल ने भी ऐसा ही कहा था। इसलिए वे दो-चार दिनों के लिए ही तैयार होकर आये थे। बाबू ब्रजकिशोर को ठीक उसी वक्त कलकत्ते में कुछ काम था। वे खुद गांधीजी के साथ न जा सके। पर उन्होंने यह भी सोच लिया कि कलकत्ते से लौटने पर वे खुद चंपारण जायेंगे और जरूरत होगी तो मुझे भी साथ ले जायेंगे।

चंपारण जिले का सदर शहर मोतीहारी है। गांधीजी वहां पहुंचे। पहुंचने के बाद उन्होंने देहात में जाने का इरादा कर लिया। एक गांव से एक प्रतिष्ठित रैयत आये, जिनका घर दो-चार ही दिन पहले नीलवर की ओर से लूट लिया गया था। उस लूट-खसोट के निशान अभी तक मौजूद थे। उन्होंने आकर सारा किस्सा कहा। गांधीजी वहीं जाना चाहते थे। रास्ते में ही कलक्टर का हुक्म पहुंचा कि आप जिला छोड़कर चले जाइए। उन्होंने जिला छोड़ने से इनकार कर दिया। वे उदूल-हुक्मी के मुकदमे का इंतजार करने लगे। उसी दिन यह भी मालूम हो गया कि मुकदमा चलेगा। मैं उसी दिन पुरी से पटना लौटा था। कचहरी में मेरे पास यह सारी बातें उन्होंने तार द्वारा लिख भेजीं।

यह पहला ही अवसर था जब गांधीजी से मेरा किसी प्रकार का संपर्क हुआ। मैंने कलकत्ते तार देकर बाबू ब्रजकिशोर को बुला लिया। दूसरे दिन सबेरे की गाड़ी से महरूलहक और पोलक—जो उस समय हिन्दुस्तान में ही थे—उसी रात को, गांधीजी का तार पाकर पटना पहुंच गये थे। बाबू ब्रजकिशोर, अनुग्रहनारायण और शंभूशरण के साथ मैं मोतीहारी के लिए रवाना हो गया। हम लोग दिन में तीन बजे के करीब वहां पहुंचे। उ समय तक मामला अदालत में पेश हो चुका था, बल्कि सुनवाई के बाद हुक्म के लिए तीन-चार दिनों के वास्ते मुलतवी कर दिया था।

बाबू गोरखप्रसाद के मकान पर गांधीजी ठहरे थे। हम लोग जब वहां पहुंचे तो गांधीजी एक कुर्ता पहने हुए बैठे थे। हम लोगों से उनका परिचय पहले से नहीं था। जब परिचय कराया गया तो मुझसे हंसते हुए उन्होंने कहा—"आप आ गये? आपके घर पर तो मैं गया था।" मैंने कुछ किस्सा तो सुन लिया था, इसलिए कुछ शर्मिंदा भी हुआ। उन्होंने, जो कुछ कचहरी में हुआ था, सब कह सुनाया।

'चंपारण में महात्मा गांधी' नामक पुस्तक में, जो उस आंदोलन के सफलता पूर्वक समाप्त होने के थोड़े ही दिनों बाद लिखी और प्रकाशित की गयी थी, मैंने चंपारण का सारा किस्सा विस्तारपूर्वक दे दिया है। यहां केवल अपने संबंध का ही जिक्र करना चाहता हूं।

गांधीजी को पहले-पहल देखकर मेरे ऊपर कोई खास असर नहीं पड़ा। मैं चंपारण का हाल थोड़ा-बहुत जानता था। पर अधिकतर बाबू ब्रजकिशोर की आज्ञा मानने के लिए ही शुरू में वहां गया था। सोचा था, जो-कुछ काम होगा वह कर दिया जायेगा। स्वप्न में भी यह मन में नहीं आया था कि वहां पहुंचते ही जेल जाने का जटिल प्रश्न हमारे सामने आयेगा।

गांधीजी ने सब बातें कहकर हमसे कहा कि अपने साथी बाबू धरनीधर और बाबू रामनवमी से और सब बातें सुन लीजिए। इतना कह वे पोलक से बातें करने लगे। हम लोगों ने उन दोनों भाइयों से विस्तारपूर्वक सारा हाल सुना। मालूम हुआ कि गांधीजी प्रायः रात-भर जागकर वायसराय तथा नेताओं

के पास भेजने के लिए पत्र लिखते रहे हैं और कचहरी के लिए अपना बयान भी उन्होंने रात में ही तैयार कर लिया था। उन दोनों से, जो दुभाषिया का काम करने के लिए ही आये थे, गांधीजी ने पूछा था कि मेरे कैद हो जाने के बाद आपलोग क्या करेंगे।

वे लोग प्रश्न की गूढ़ता को शायद पूरा समझ न सके थे। बाबू धरनीधर ने मजाक में कह दिया कि आपके (गांधीजी के) कैद हो जाने के बाद दुभाषिया का काम नहीं रह जायेगा—हम लोग अपने-अपने घर चले जायेंगे! यह सुनकर गांधीजी ने प्रश्न किया और इस काम को ऐसे ही छोड़ देंगे? इस पर उन लोगों को कुछ सोचना पड़ा। बाबू धरनीधर ने, जो बड़े थे, उत्तर दिया कि वे जांच का काम जारी रखेंगे, और जब उन पर भी सरकार की ओर से नोटिस हो जायेगी, तो वे चूंकि (जेल) जाने के लिए तैयार नहीं हैं, खुद तो (घर) चले जायेंगे और दूसरे वकील को भेजेंगे, जो जांच का काम करेंगे, और अगर उन पर भी नोटिस हुई, तो वे भी (घर) चले जायेंगे और पीछे तीसरी टोली आयेगी—इस प्रकार काम जारी रखा जायेगा।

यह सुनकर गांधीजी को कुछ संतोष हुआ, पर पूरा नहीं। उन लोगों को भी संतोष न हुआ। वे लोग रात को सोचते रहे कि यह आदमी न मालूम कहां से आकर यहां के रैयतों के कष्ट दूर करने के लिए जेल जा रहा है और हम लोग—जो यहां के रहने वाले होकर रैयतों की मदद का दम भरा करते हैं—इस तरह घर चले जायें, यह अच्छा नहीं मालूम होता।

पर जेल की बात अभी हममें से किसी ने कभी सोची ही न थी। जेल तो एक भयंकर जगह समझी जाती थी, जहां से गिरफ्तारी के बाद भी बचने के लिए लोग हजारों खर्च करके जमानत पर छुट्टी लिया करते थे। अगर कोई मजबूरी से जेल गया भी तो वहां रुपये खर्च करके आराम पाने का प्रबंध करता था। और, यहां यह आदमी, जो दक्षिण अफ्रीका में इतना काम कर आया है, इन अनजान किसानों की खातिर सब कष्ट सहने के लिए तैयार है। ऐसी दशा में भी हम घर चले जायें, यह कैसे हो सकता है? इधर बाल-बच्चों की भी फिक्र थी!

रात-भर सोच-विचार करने के बाद, दूसरे दिन सबेरे, जब गांधीजी के साथ ये लोग कचहरी जा रहे थे, इनकी भावनाएं उमड़ पड़ीं। इन्होंने साफ-साफ कह दिया, आपके जेल जाने के बाद अगर जरूरत पड़ी तो हम लोग भी जेल जायेंगे।

यह सुनते ही गांधीजी का चेहरा खिल उठा। वे बहुत ही खुश होकर बोल उठे—अब मामला फतह हो जायेगा।

वहां पहुंचते ही ये सारी बातें हम लोगों ने उन दोनों भाइयों से सुनीं। अब तो हमारे सामने भी जेल जाने का प्रश्न आ गया। हम लोगों ने तय कर लिया कि जरूरत पड़ने पर हम भी जेल जायेंगे। यह निश्चय गांधीजी को हमने सुना दिया। उन्होंने कागज-कलम लेकर सबके नाम लिख लिये। हम लोगों को कई टोलियों में उन्होंने बांट दिया। यह भी तय कर दिया कि ये टोलियां किस क्रम से जेल जायेंगी। एक टोली का सरदार मैं भी बनाया गया। ये सारी बातें, वहां पहुंचने के तीन-चार घंटों के अंदर ही तय हो गयी।

मुकदमे में, तीन या चार दिनों के बाद हुकुम सुनाया जाने को था। उस दिन गांधीजी जेल जाने वाले थे। मजहरूलहक साहब के हाथ में कोई मुकदमा गोरखपुर में था। वे वहां चले गये, ताकि मामला खतम करके उस दिन के पहले ही वापस आकर नेतृत्व करेंगे।

बाबू ब्रजकिशोर भी अपने घर का प्रबंध करने के लिए दरभंगा चले गये। हम लोग मोतीहारी में ही ठहरकर किसानों के बयान सुनने और लिखने लगे। विचार था कि जब ये दोनों सज्जन वापस आ जायेंगे तब हम लोग भी एक-एक करके घर जायेंगे और घर के लोगों से मिल-जुलकर जेल-यात्रा की तैयारी करके लौट आयेंगे।

गांधीजी ने अपनी 'आत्मकथा' में लिखा है कि इससे वे संतुष्ट हुए थे, और उसी दिन से बिहार के प्रति उनका बहुत प्रेम हो गया और हम लोग उनके विश्वासपात्र बन गये।

चंपारण की जांच शुरू हो गयी। हजारों की तादाद में किसानों ने बयान लिखवाये। शायद बीस-पच्चीस हजार बयान हम लोगों ने लिखे होंगे। तारीख के पहले ही मजिस्ट्रेट ने लिख भेजा कि सरकार के हुकुम से गांधीजी पर से मुकदमा उठा लिया गया और उनको जिले में जांच करने की इजाजत दे दी गयी। जांच से पता चला कि जो कुछ जुल्म हमने सुना था, वहां की परिस्थिति उससे कहीं अधिक बुरी थी।

यहां पर इतना ही कह देना काफी है कि पहली मुलाकात में ही हम लोग अपनी इच्छा से गांधीजी की फांस में फंस गये। ज्यों-ज्यों दिन बीतते गये, उनके साथ केवल प्रेम ही नहीं बढ़ा, उनकी कार्य-पद्धति पर विश्वास भी बढ़ता गया। चंपारण का कांड समाप्त होते-होते हम सब के सब उनके अनन्य भक्त और उनकी कार्यप्रणाली के पक्के हामी बन चुके थे। (आत्मकथा के 21वें अध्याय 'गांधीजी से भेंट' से साभार) ❑

'सर्वोदय जगत'
के सुधी पाठकों
की सुविधा को
ध्यान में रखते हुए
पत्रिका का हर अंक
सर्व सेवा संघ-प्रकाशन की
वेबसाइट
sssprakashan.com
पर उपलब्ध है।
इस सुविधा का लाभ
पाठकगण
उठा सकते हैं। –सं.

बा-बापू : 150वीं जयंती पर विशेष

'बा' भारत वापसी

❑ गिरिराज किशोर

गांधीजी को लेकर एक बड़ा और चर्चित उपन्यास प्रस्तुत कर चुके श्री गिरिराज किशोर ने अब बा पर कलम उठायी है। बा पर कुछ भी लिखना बहुत कठिन था। नहीं के बराबर जानकारियां। 'पहला गिरमिटिया' की सामग्री जुटाने में उन्हें कोई दो हजार पुस्तकों से मदद मिली थी। और 'बा' उपन्यास लिखते समय मुश्किल से दो पुस्तकें सामने थीं। वे उन सब लोगों से मिले, जिन्हें कस्तूरबा के बारे में थोड़ी-सी भी जानकारी थी और उन जगहों पर गये, जहां बा ने थोड़ा या बहुत समय बिताया था। इस तरह बनी यह कथा, यह इतिहास बा के अलावा खुद बापू के दो और रूपों को भी सामने रखता है–पति और पिता का रूप। प्रस्तुत है 'बा' का एक अंश, जो बा-बापू : 150 के अवसर पर क्रमशः प्रकाशित हो रहे हैं। –सं.

पता नहीं अपने अवसाद के क्षणों में कहा गया वाक्य कि वे बा का चेहरा नहीं देखना चाहते, उन्हें याद भी था या नहीं। अगर वह जान भी लेती तो क्या अपने को बदल लेती? बा अपना धैर्य खोती जा रही थी। बापू का खाना न खाना, एक बार के बाद अपने ही द्वारा निर्धारित दवा दोबारा लेने से मना कर देना, डॉक्टरों द्वारा उनकी इस मान्यता को नकार देना कि वे मरने वाले हैं...और कुछ नहीं था सिवाय अपने को दुःख पहुंचाने के सिवाय। वह व्यक्ति जो दूसरों को अहिंसा के संदेश से बदल देता था, वह

अपने दिल और दिमाग के साथ हिंसा कर रहा था। प्रकारांतर से कस्तूरबा भी उस हिंसा का शिकार हो रही थी। वे मृत्यु को चुन रहे थे। उसे रोकना था। बा ऐसे घर से लौटी थी जहां उसने दो स्वजनों की मौत को देखा था। वह जानती थी कि अगर उसके सामने कभी ऐसी स्थिति आयी तो वह जीवन को ही चुनेगी। जीवन के सिवाय कहीं कुछ नहीं। सावित्री ने भी मृत्यु को हराकर जीवन का ही वरण किया था। उसे अपने पति को उनसे ही बचाना है। चाहे जैसे भी हो। दूसरे से बचाने के मुकाबले मनुष्य को उसी से बचाना कठिन होता है।

बापू की बढ़ती पीड़ा ने बा का साथ दिया। दिसंबर में बापू बा के साथ बम्बई जाने के लिए मान गये। डॉ. दलाल पुराने किस्म के अनुभवी डॉक्टर थे। उनका सुनिश्चित मत था कि केवल ऑपरेशन से ही दर्द और बीमारी से मुक्ति मिल सकती है। लेकिन सर्जरी तब तक संभव नहीं थी जब तक शरीर इस लायक न हो जाये कि ऑपरेशन झेल पाये। डॉक्टर की राय थी कि उन्हें थोड़े-थोड़े अंतराल के बाद दूध लेना तत्काल आरंभ कर देना चाहिए। जब डॉक्टर बता रहे थे बा वहां मौजूद थी और पति की बात ध्यान से सुन रही थी। उन्होंने दूध लेने से साफ मना कर दिया।

डॉक्टर दलाल ने कारण पूछा। बापू का कहना था कि दूध देने वाले जानवरों पर दूधियों द्वारा जुल्म किये जाने के कारण वर्षों पहले दूध न पीने का कसम खायी थी। उनकी कसम कोई नहीं तोड़ पाया। जब बापू यह सब कह रहे थे तो बा का दिमाग तेजी से काम कर रहा था। थोड़ा रुककर शांत भाव से बोली, 'ठीक है, तुम्हें बकरी का दूध पीने में तो कोई आपत्ति नहीं होगी?'

डॉ. दलाल ने बात पकड़ ली, 'हां, बकरी का दूध ठीक रहेगा।'

एक क्षण के लिए बापू उलझन में पड़ गये। उन्होंने मन ही मन अपने विचारों को खंगाला। उन्हें लगा कि एक बार फिर उनकी जीवन संगिनी ने अपनी सहजता के कारण उन्हें परास्त कर दिया। जब उन्होंने दूध न पीने की शपथ ली थी तो बकरी के दूध की बात उनके दिमाग में नहीं थी। केवल गाय के दूध के बारे में सोचा था। इसलिए वे बकरी का दूध बिना अपनी कसम तोड़े पी सकते हैं। उस हालत में वे सत्याग्रह आंदोलन आरंभ कर सकेंगे। इस विचार मात्र से उनमें नई ऊर्जा आ गयी। उसी शाम बापू ने बकरी के दूध का पहला गिलास लिया।

ऑपरेशन के बाद बापू के स्वस्थ होने में कई हफ्ते लगे। उनका ऑपरेशन मणिभवन में बा की निगरानी में हुआ। मणिभवन उनके मित्र और संबंधी डॉ. पी. जे. मेहता ने बापू को भेंट किया था। तीस साल पहले जब मोहनदास लंदन कानून की पढ़ाई करने गये थे, वे उनके ही अतिथि हुए थे। वहां मेहता ही एक तरह उनके मार्ग-निर्देशक थे। जब भी बंबई जाते थे, मणिभवन में ही ठहरते थे।

बापू के लिए एक सोलह औंस दूध देने वाली बकरी आयी तो उसका नाम उन्होंने मदरगोट रखा। जो दूध पिलाये वही मदर। वह बकरी धीरे-धीरे सबकी प्यारी हो गयी। बापू की मदरगोट सबकी मदरगोट हो गयी। हालांकि बापू की कमजोरी अभी पूरी तरह गयी नहीं थी। बा को उन्हें बिस्तर में बनाये रखने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता था। जब बा सख्ती के साथ कहती थी तो बाबू हंसकर कहते थे, 'तुम पुरानी रोब जमाने वाली मानसिकता में आती जा रही हो।'

बा तुरंत कहती थी, 'हां, तुम्हारे स्वास्थ्य की बात होगी तो मैं चुप नहीं रहूंगी, दिखा दूंगी मेरा उद्देश्य है काम से काम।' फिर बोली, 'मैं तुम्हें मटरगश्ती नहीं करने दूंगी।'

'तुम अंग्रेजों से भी अधिक कठोर हृदय

हो।' बापू ने इस भावना के उत्तर में हंसकर कहा। बा के लिए उनका यह कहना इस बात का सबूत था कि वे तन-मन से स्वस्थ हो रहे हैं।

जनवरी महीने में हरिलाल कलकत्ता जाते हुए बच्चों को मणिभवन दादी की देखरेख में छोड़ गया था। घर में चार सहमे और दबे-ढके बच्चे आ गये थे। वे उठते-बैठते भी थे तो यह देखकर, कहीं कोई धृष्टता तो नहीं कर रहे हैं। जो कुछ कहना होता था बड़ी बहन रामी से फुसफुसाकर कहते थे। रामी बा से कह देती थी। वे कुछ दिन तक घर में हुई दो मर्मांतक घटनाओं के प्रभाव में रहे। वह दुःख इतना भयावह था जिसे इतने छोटे बच्चों के लिए समझना कठिन था। उनकी मां गयी थी और हर समय साथ खेलने-बोलने वाला भाई। उनका स्थान दिलों में रिक्तता भर गया था। बस रामी अपनी बा और भाई शांति की मृत्यु की गहराई समझती थी। यह अपनी दादी के आराम का महत्त्व समझती थी। बापू भी बच्चों का खयाल रखते थे। बा को उससे बड़ा सुकून मिलता था। एक हफ्ते बाद जब महादेव भाई बंबई आये तो उन्होंने अपने नाराज बेटे हरिलला के नाम एक पत्र लिखवाया। बापू के कहने के बारे में विशेष रूप से लिखवाया था कि 'मनु की चमक लगातार बढ़ रही है, कांति और रसिक मेरी खाट के पास खेलते रहते हैं। उन्हें खेलते देखकर मुझे तुम्हारी याद आती है।' बा-बापू के उपरोक्त शब्दों को सुनकर सोच रही थी, इस दुःख-भरे हादसे की छाया में मेरे परिवार में आत्मीयता का उय हो रहा है।

बापू को हरिलाल के दो नंबर के छह वर्षीय बेटे रसिकलाल के साथ बात करने में आनंद आता था। उन्होंने उसके लिए एक निरर्थक कविता लिखी थी :

रसिकलाल हरिलाल
मोहनदास करमचंद गांधी के पास है
एक बकरा
बकरा दूध नहीं देता
और गांधी रोना बंद नहीं करता।।

...क्रमशः अगले अंक में

गतिविधियां एवं समाचार

गांधी-निर्वाण दिवस पर स्मरणांजलि

उन्नाव सर्वोदय मंडल द्वारा 'गांधी-निर्वाण दिवस' 30 जनवरी के अवसर पर पन्नालाल पार्क में समाज में सांप्रदायिक सद्भाव, भाईचारा तथा मानवीय मूल्यों की सुरक्षा हेतु एक दिवसीय 'सांकेतिक उपवास' का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस मौके पर सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष रामशंकर भाई ने कहा कि आज गांधीजी के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। वर्तमान में भारत का जो धर्म-निरपेक्ष लोकतांत्रिक स्वरूप है, वह महात्मा गांधी के सिद्धांतों के कारण ही संभव हो सका है।

इस मौके पर प्रमुख गांधीवादी व जेपी आंदोलन से जुड़े शिक्षाविद दिनेश प्रियमन ने कहा कि गांधी की बुराई की बात करने वाले समाज व देश के दुश्मन हैं। गांधीजी सत्य व अहिंसा के प्रतीक थे।

जिला सर्वोदय मंडल के संयोजक गिरजेश पांडे ने गांधीजी के सपनों के अनुरूप भारत के निर्माण पर बल दिया, जिसमें सभी वर्ग अथवा समुदाय के लोगों का सम्मान हो।

कार्यक्रम में जिला सर्वोदय मंडल के मंत्री संजीव श्रीवास्तव, रघुराज सिंह मगन, रामसजीवन यादव, सुखदेव यादव, मजहर हुसैन, रामकिशोर बाजपेई, अनुराग सहित अनेक लोगों ने गांधीजी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला तथा सांकेतिक उपवास में अपनी भागीदारी की। **–रघुराज सिंह मगन**

× × ×

जिला सर्वोदय मंडल, सहरसा द्वारा विनोबा आश्रम में 30 जनवरी 'गांधी निर्वाण-दिवस' के अवसर पर 'उपवास कार्यक्रम' मंडल के अध्यक्ष कमल प्रसाद की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। प्रारंभ में उपस्थित सभी लोगों ने गांधीजी का प्रिय भजन 'वैष्णव जन तो तेणे कहिए...' का पाठ किया।

इस अवसर पर विनोबा आश्रम के व्यवस्थापक चक्रमणि सिंह ने गांधीजी के जीवन के कई आयामों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वर्तमान में गांधी-विचार की प्रासंगिकता और बढ़ गयी है। आज एक समूह द्वारा गांधी के हत्यारे को महिमामंडित किया जा रहा है, ऐसे समूह से समाज को खतरा है। इसलिए जरूरत है गांधी-विचार को जन-जन तक पहुंचाने की।

कार्यक्रम में प्रवीण कुमार सिंह, अभिनंदन कुमार, मानस, रजनीश कुमार, डॉ. अजय, सुरेश कुमार साह आदि उपस्थित रहे। संचालन प्रो. दीपक कुमार सिंह ने किया। **–प्रो. दीपक कुमार**

शोक-सभा का आयोजन

गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र एवं प्रदेश सर्वोदय मंडल के संयुक्त तत्त्वावधान में 4 जनवरी 2019 को देश के वरिष्ठ गांधीवादी एवं महाराष्ट्र उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश पद्मविभूषण चंद्रशेखर धर्माधिकारी के निधन पर गांधी भवन में शोक-सभा आयोजित कर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। चंद्रशेखर धर्माधिकारी का निधन एक दिन पूर्व 3 जनवरी की रात मुंबई में हो गया था। शोक-सभा में प्रतिष्ठान की अध्यक्ष आशा बहन बोथरा ने धर्माधिकारी की सेवाओं का स्मरण करते हुए कहा कि सर्व सेवा संघ से उनका गहरा एवं आत्मीय संबंध था। वे एक प्रज्ञावान एवं अध्ययनशील विचारक थे। उन्होंने सर्वोदय समाज को विचार एवं क्रिया दोनों स्तरों पर नई दिशा प्रदान की। उनके निधन से देश ने एक समर्पित गांधीवादी मार्गदर्शक खो दिया है।

प्रतिष्ठान के उपाध्यक्ष डॉ. ओपी टॉक ने कहा कि चंद्रशेखरजी भाग्यशाली थे। उन्हें महात्मा गांधी का प्यार मिला, विनोबा को उन्होंने आत्मसात् किया तथा अपने सत्यनिष्ठ पिता दादा धर्माधिकारी के संस्कारों को उन्होंने जीवन में उतारा। उनकी पुस्तक 'एक न्यायमूर्ति का हलफनामा' का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि अपनी सहज सरल भाषा-शैली के कारण यह पुस्तक आत्मकथा साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। वे गांधीवादी चिन्तकों की विद्वत् परंपरा की स्वर्णिम कड़ी थे। उनके निधन से सर्वोदय समाज को बड़ी क्षति हुई है।

इस अवसर पर चंद्रशेखरजी के जीवन से जुड़ी घटनाओं व उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को रेखांकित किया गया। शोक-सभा में डॉ. पद्मजा शर्मा, देवेन्द्रनाथ मोदी, गीता भट्टाचार्या, हेना भट्टाचार्या, मनोहर सिंह चौहान, करण सिंह, परिहार, नवीन चितारा, रामकिशोर जाखड़, अशोक चौधरी, जयपाल सिंह चंपावत, कमलेश सहित गांधी भवन के कार्यकर्ताओं एवं शिक्षाविदों तथा गणमान्य नागरिकों व विद्यार्थियों ने दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। **–डॉ. भावेन्द्र शरद जैन**

सीमा मधुरिमा की तीन कविताएं

नन्हें पैर

नन्हें हाथ, नन्हें पैर
भाग-भाग कर...
ढाबों पर, दुकानों पर
काम करते रमकर
मुंह पर हरदम मुस्कान लिये
मन की पीड़ा पिये हुए
साहब, मेम साहब,
बड़े पदों के आफिसर
सबकी मांगे पूरी करते
मुस्करा कर सलाम ठोककर
उनके भी अरमान हैं,
विद्यालय जायें,
बस्ता लेकर...
मम्मी लंच बनाकर दें,
पानी की बोतल दें भरकर
पर वह मजबूर हैं,
गरीबी से सब चूर चूर हैं
नन्हें हाथ, नन्हें पैर
भूखे पेट का पालन रहे हैं कर
न किसी को उनपे आता तरस
न किसी को लगता जायें घर
बड़े-बड़े घरों के लोग,
बड़े-बड़े आफिसर
खाते-पीते-चिल्लाते,
हंसते जाते चले टीप देकर
किसी ने उनके हालत की न सोची
न सोचा विचारकर
ये हैं हमारे देश के भविष्य
इनपर करेगा देश निर्भर
जब खोखला बीज बोकर,
क्या पाओगे ये सींचकर
गरीबी से मजबूर हैं ये,
नन्हें हाथ, नन्हें पैर
घर भर का पेट भरते
मेहनत बेचकर!

आत्मा

सच, नहीं पता तुम्हारा अस्तित्व
कोई तो है मेरे भीतर जिन्दा
जो जीवन जी रहा है
कोई तो है जो मेरे बाद भी
मेरा होगा
शायद तुम्हें पोषित करने को,
होता रहेगा मेरा जन्म बार-बार
और तुम होते रहोगे अवतरित
हर बार ढेरों दिखाओगे ख्वाब
और
जगाओगे मुझमें अंतहीन वासना
और मुझे भागना ही पड़ेगा
उन्हें पूरा करने को
और तुम,
तुम बस साक्षी बन देखोगे मुझे
और हां,
हर बार चेताते भी रहोगे
मेरा अस्तित्व
खत्म होना है,
मुझे भी हर जीवित प्राणी की तरह
मरना है
पर मैं कहां सुनने वाली
मैं भागती ही रहूंगी
अंतहीन प्रश्नों के पीछे
मांगती रहूंगी जवाब
पर तुम्हें न स्वीकार कर
मैं हर पल तनहा रह जाऊंगी,
और तुमको भी न जान पाऊंगी
और फिर खत्म हो जायेगा
मेरे साथ ही मेरा यह मैं भी
फिर बस बचोगे सिर्फ तुम
जो एक नये जीवन को
पोषित करने की तैयारी में!

सहनशक्ति

जानते हो, जानना चाहते हो
यह सहनशक्ति क्या होती है
और कैसी होती है
किस रंग-रूप की होती है
और इसके कितने हाथ-पैर
होते हैं, ये कैसे चलती है
क्या खाती है, क्या पीती है
तो सुनो, ये सहनशक्ति बिल्कुल
नारी जैसी होती
कभी महसूस करना
एक नारी को।
बेटी रूप में दिखेगी
त्याग की मूर्ति
जब कभी आती है
बेटे मांग बीच में
कभी महसूस करना
एक पत्नी को
जो मार देती है अपनी हर कामना
और पति की जरूरतों के लिए
सीख ही लेती है जीना
कभी महसूस करना
एक बहू में त्याग और
सहनशक्ति की एक ऊंचाई
सच, सहनशक्ति का दूसरा
नाम ही नारी है
जिसके चलते रहते हैं
कितने ही झूठे रिश्ते! ❑

सर्व सेवा संघ (स्वत्वाधिकारी) के लिए महामंत्री, शेख हुसैन द्वारा सर्व सेवा संघ परिसर, राजघाट, वाराणसी (उ.प्र.) 221001 से प्रकाशित तथा महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी से मुद्रित। संपादक : अशोक मोती।